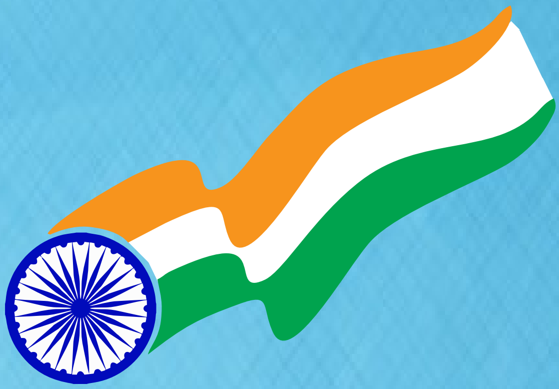

पुष्पांजलि

हिंदी गृह पत्रिका

2023

भौगोलिक सूचना पद्धति और सुदूर संवेदन निदेशालय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, हैदराबाद

पुष्पांजलि

2023

भौगोलिक सूचना पद्धति और सुदूर संवेदन निदेशालय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, उप्पल, हैदराबाद-500039

पुष्पांजलि
वार्षिक अंक : 2023

संरक्षक

एस.वी.सिंह	निदेशक

संपादकीय समिति

देव कुमार उरॉव	अधीक्षणसर्वेक्षक
ए.के.लाल	अधीक्षण सर्वेक्षक
के.प्रसन्ना लक्ष्मी	कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

मुख पृष्ठ सृजन
आंतरिक सज्जा, कंप्यूटर सेटिंग व मुद्रण कार्य

स्पेस गुप्ता	उप अधीक्षण सर्वेक्षक
तन्नीरु देवेन्दर	सर्वेक्षक

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं। संपादक मंडल अथवा भारतीय सर्वेक्षण विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

बिक्री के लिए नहीं।
केवल आंतरिक परिचालन के लिए

सुनील कुमार
भा.व.से.

Sunil Kumar
I.F.S.

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय,
हाथीबडकला एस्टेट, पोस्ट बाक्स न० 37
देहरादून-248 001 (उत्तराखण्ड), भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office
Hathibarkala Estate, Post Box No.37
Dehradun-248 001, (Uttarakhand), India.

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हैदराबाद में स्थित भौगोलिक सूचना पद्धति और सुदूर संवेदन निदेशालय द्वारा राजभाषा गृह पत्रिका "पुष्पांजलि" के वार्षिक अंक-2023 का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारतवर्ष की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध बनाने में देश की विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं और बोलियों का महत्वपूर्ण योगदान है और हमारी संस्कृति के विभिन्न भागों को जोड़ने की क्षमता हिंदी भाषा में है। पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय के सभी कार्मिकों को अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर तो मिलता ही है, साथ ही सरकारी कामकाज हिंदी में करने के प्रति उनकी रुचि भी बढ़ती है। यह निदेशालय पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए प्रयासरत है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए मैं रचनाकारों और संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ

(सुनील कुमार)
भारत के महासर्वेक्षक

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

दूरभाष: Telephone: 0135 - 2977976
0135 - 2977975
0135 - 2977980
फैक्स/Fax: 0135 - 2977970
ईमेल/E-mail: zone.spl.soi@gov.in

अपर महासर्वेक्षक, विशिष्ट क्षेत्र का कार्यालय,
OFFICE OF ADDITIONAL SURVEYOR
GENERAL, SPECIALIZED ZONE
ब्लॉक 6, हाथीबडकला एस्टेट, पोस्ट पत्र पेटी संख्या 200
Block 6, Hathibarkala Estate, Post Box No. 200
देहरादून-248 001 (उत्तराखण्ड),
Dehradun-248 001, (Uttarakhand)

संदेश

मुझे यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि भौगोलिक सूचना पद्धति और सुदूर संवेदन निदेशालय, हैदरबाद में राजभाषा हिंदी की गृह पत्रिका "पुष्पांजलि" का वार्षिक अंक-2023 का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी वर्षों से हमारे देश की राजभाषा और संपर्क भाषा के रूप में राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को सुदृढ़ करती आ रही है। जिस तरह हमारे राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गान और किसी भी राष्ट्रीय प्रतीक को हम देश के सम्मान का विषय मानते हैं, उसी तरह हमारी राजभाषा हिंदी के प्रति हम गर्व का अनुभव करते हैं, क्योंकि हिंदी भाषा की जड़ें मान्यताओं एवं परंपराओं के द्वारा सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर देश को जोड़ती हैं। हिंदी केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में राजभाषा के गौरवपूर्ण पद पर आसीन है। राजभाषा हिंदी को विकसित करना तथा सरकारी कामकाज में इसका अधिकाधिक प्रयोग करना हमारा राष्ट्रीय, प्रशासनिक एवं नैतिक कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्य पथ पर चलते हुए, इस पत्रिका का प्रकाशन एक सार्थक प्रयास है।

इस पत्रिका में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों को बधाई तथा इसके सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ ।

अपर महासर्वेक्षक
विशिष्ट क्षेत्र

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
DEPARTMENT OF SCIENCE & TECHNOLOGY
DST@ 1971-2021

Save Paper.
Save Trees.
Save the World.

फोन / Phone: 27201181(EPABX). 27200430
टेलि-फैक्स/ tele-Fax: 27200430
ई-मेल/ E-mail: gisrs.soi@gov.in

भौगोलिक सूचना पद्धति और सुदूर संवेदन निदेशालय
GIS & REMOTE SENSING DIRECTORATE
उप्पल, हैदराबाद -500 039 (तेलंगाणा)
UPPAL, HYDERABAD - 500 039 (Telangana)

निदेशक की कलम से......

स्वतंत्रता के पश्चात् शासन एवं जन-जन की एक संपर्क भाषा के रूप में रखने के उद्देश्य से हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया और यह अपेक्षा की गई कि राजभाषा हिंदी देश की एकता व प्रगति में भरपूर योगदान प्रदान करेगी। केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए पत्रिकाओं का प्रकाशन भी एक प्रमुख दायित्व है। इस दायित्व को निभाते हुए हमारे निदेशालय की राजभाषा गृह-पत्रिका "पुष्पांजलि" का वार्षिक अंक-2023 का प्रकाशन किया है । हमने इस पत्रिका के माध्यम से कार्यालय में कार्यों की प्रगति की सूचना, गतिविधियों व अन्य योजनाओं इत्यादि के बारे में सचित्र विवरण के साथ जानकारी दी है।

अच्छी गुणवत्ता की सामग्री उपलब्ध होने से पत्रिका का प्रकाशन का मार्ग सुगम हो जाता है। परंतु कार्यालयीन जीवन बिताते हुए लेखन और अध्ययन से भी जुड़े रहना सरल कार्य नहीं है। स्वामित्व योजना और राष्ट्रीय जल परियोजना से संबंधित कार्यों में बहुत ही व्यस्त होने के बावजूद हमारे अधिकारी गणों ने, पत्रिका के प्रकाशनार्थ अपना योगदान दिया हैं । कुछ कर्मचारियों ने अपने परिवारजनों की सृजनात्मकता, कल्पनाशीलता को सबके साथ बाँटने का प्रयास किया है। यह योगदान निश्चित ही प्रशंसनीय है।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं संपादक मंडल को शुभकामनाएँ देता हूं। प्रकाशित रचनाओं के लेखकों को मेरी हार्दिक बधाई जिनके योगदान से इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हुआ है।

(एस.वी.सिंह)
निदेशक

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

SURVEY OF INDIA

Save Paper.
Save Trees.
Save the World.

फोन / Phone: 27201181(EPABX). 27200430
टेलि-फैक्स/ tele-Fax: 27200430
ई-मेल/ E-mail: gisrs.soi@gov.in

भौगोलिक सूचना पद्धति और सुदूर संवेदन निदेशालय
GIS & REMOTE SENSING DIRECTORATE
उप्पल, हैदराबाद –500 039 (तेलंगाणा)
UPPAL, HYDERABAD - 500 039 (Telangana)

संदेश

हिंदी को राजभाषा बनाए रखने के लिए सही अर्थ में हिंदी सीखने की नितांत आवश्यकता है। हिंदी सीखने से अनेक प्रकार के लाभ हैं, जैसे पूरे देश में इस भाषा के सहारे सुगमता से यात्रा की जा सकती है। लोगों को अपनी बात आसानी से समझाई जा सकती है। हिंदी सीखने से हमारी क्षमता का विकास होगा और आत्मविश्वास बढ़ेगा।

विभिन्नता में एकता भारतवर्ष की विशेषता है क्योंकि अनेक भाषाओं, धर्मों, जातियों और रीति रिवाजों के बावजूद इस देश में एकता देखने को मिलती है। दक्षिण भारत में स्थायी निवास स्थान बना चुके उत्तर भारत वासी भी स्थानीय/प्रादेशिक भाषा सीख चुके हैं। स्थानीय लोगों से उनकी भाषा में दो-चार शब्द बोलकर अपनापन जताते हैं, जिसे देख कर बहुत अच्छा लगता है। भारतवर्ष में एकता स्थापित करने के लिए इस प्रकार का व्यवहार बहुत ही प्रभावशाली है।

सरकार सभी कार्मिकों को देश भ्रमण के लिए छुट्टी यात्रा रियायत की सुविधा देती है। इस सुविधा का लाभ उठाने वाले कार्मिकों को अपनी यात्रा के अनुभवों के बारे में हिंदी में लिखने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास हमने किया है। हमारी वार्षिक पत्रिका पुष्पांजलि-2023 में हमारे निदेशालय में कार्यरत अधिकारियों / कर्मचारियों द्वारा लिखित यात्रा वृत्तांतों का प्रकाशन किया गया है।

हिंदी भाषा पूर्ण रूप से सक्षम और सशक्त भाषा है। बोलचाल में हिंदी का प्रयोग और हिंदी का लेखन बहुत ही सरल है। हिंदी हमारी राजभाषा है इसे सहर्ष अपनाइए।

एम. संतोष

(एम. संतोष)
अधीक्षण सर्वेक्षक

संपादकीय

रोज लाखों आते हैं सितारे आसमां पर, धुप अंधेरा क्यों न हो,
न आलस एक रात का, न छल कोई, वे सदा ही झिलमिलाये जाते हैं।
हजारों मील दूर सितारों को देख लेते हैं हम, यूँ तो अंधेरों में भी,
आसां है, बस इक बार नजरें फलक का रुख तो करे।

हमारे भौगोलिक सूचना पद्धति और सुदूर संवेदन निदेशालय की राजभाषा गृहपत्रिका पुष्पांजलि का वार्षिक अंक-2023 आपके हाथों में है। विगत तीन वर्षों से इस पत्रिका की मुद्रित प्रति के परिचालन को सीमित रखते हुए इसे इलेक्ट्रानिक (डिजिटल) प्रति के रूप में अधिक से अधिक प्रचारित और प्रसारित करने का प्रयास किया जा रहा है। इस प्रयास का उद्देश्य इस पत्रिका को विभाग के अधिक से अधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सुगमता से पठन-पाठन हेतु उपलब्ध कराना है।

देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है साथ ही विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में चन्द्रयान-3 और आदित्य-एल1 का सफल प्रक्षेपण कर देश ने नया इतिहास रचा है।

इस वर्ष की पत्रिका में अधिकारियों/कर्मचारियों के बच्चों की भी रचनाएँ सम्मिलित की गई हैं। यह हर्ष एवं संतोष की बात है कि इस पत्रिका के माध्यम से अधिकारियों/कर्मचारियों के बच्चों में भी हिन्दी में पत्रिका के लिए कुछ लिखने की अभिरुचि का सृजन हुआ। वे अपने लेखों/रचनाओं को इस पत्रिका में मुद्रित पाकर निश्चय ही हर्षित होंगे एवं भविष्य में और रचनाओं का सृजन करने हेतु प्रेरित होंगे।

इस अंक में अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह की यात्रा का विवरण, पंच नरसिंहा क्षेत्रम यादाद्री, सबसे अच्छी साधना, आदि शंकराचार्य आदि लेख / संकलन बड़े रोचक और जानकारी पूर्ण हैं। कुछ लघु कथाये भी अत्यंत रुचिकर हैं। वर्तमान दैनिक मानव मूल्यों का यथार्थ चित्रण करती कविता वक्त नहीं प्रशंसनीय है।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु समस्त सहयोगियों तथा बहुमूल्य लेख, कविता, संकलन के लिए समस्त लेखकों, रचनाकारों एवं संकलनकर्ताओं का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आशा करता हूँ कि आनेवाले वर्षों में भी यह पत्रिका और अधिक ज्ञानवर्धक और मनोरंजक सामग्री के साथ निरंतर प्रकाशित की जाती रहेंगी।

शुभकामनाओं सहित !

दे. कु. उराँव

(देव कुमार उराँव)
अधीक्षण सर्वेक्षक

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	लेख / रचना	लेखक / रचनाकार सर्वश्री / श्रीमती	पृष्ठ संख्या
1.	मेरी अंडमान तथा निकोबर द्वीप समूह यात्रा की अविस्मरणीय यादें	बिजल एन.तेवार	1
2.	हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में सिनेमा की भूमिका	नर बहादुर	8
3.	वक्त नहीं	बी.सी.परिडा	9
4.	मूल्यवान कौन	पी.के. प्रतिभा	11
5.	मनौती	जेकब थॉमस	12
6.	आदि शंकराचार्य	के. श्रीहरि रेड्डी	13
7.	जगदीशचंद्र बोस	एस. भाग्यश्री	17
8.	हिंदी पखवाड़ा समारोह-2022	कार्यालय सूचना	18
9.	पदोन्नत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची	कार्यालय सूचना	20
10.	स्थानांतरण पर तैनात अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची	कार्यालय सूचना	20
11.	स्थानांतरित अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची	कार्यालय सूचना	21
12.	सेवा निवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची	कार्यालय सूचना	21
13.	वर्ष 2022-23 के लिए पुरस्कृत अधिकारियों की सूची	कार्यालय सूचना	22
14	मूल रूप से हिंदी में टिप्पण/ आलेखन कार्य करने के लिए प्रोत्साहन योजना वर्ष 2022-23	कार्यालय सूचना	22
15.	बारह खड़ी(बाल कविता)	बी.आर.विस्मया	23
16.	हैदराबाद की चाय	डी.नागतेजा	24
18.	सबसे अच्छी साधना	जे.भारती राज	25
19.	कुछ रोचक अभिव्यक्तियां	जी.प्रणीती	27
20.	पंच नरसिंहा क्षेत्रम यादाद्री	के.प्रसन्ना लक्ष्मी	29
21.	भारत के बाहर हिंदी	विभिन्न स्रोतों से साभार	32
22.	भूगणित से संबंधित हिंदी पारिभाषिक शब्द	भूपेन्द्र सी.परमार	35

मेरी अंडमान तथा निकोबर द्वीप समूह यात्रा की अविस्मरणीय यादें

---श्रीमती बिजल एन तेवार, अधिकारी सर्वेक्षक

बंगाल की खाड़ी में मोतियों की लड़ी की तरह सैकड़ों किलोमीटर की लंबाई तक बिखरे अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में कुल 572 द्वीप और द्वीपिकायें हैं और उनमें से केवल 34 द्वीपों में ही आधुनिक सभ्यता के लोग रहते हैं। अंडमान द्वीप समूह के भ्रमण की हमारी इच्छा काफी पुरानी थी, लेकिन किन्हीं कारणों से टलती रही। छुट्टी यात्रा रियायत की एक्सटेंशन अवधि समाप्त होने जा रही थी, इस वजह से अचानक ही अंडमान यात्रा का कार्यक्रम बनाया, जिसकी इच्छा हमें कई वर्षों से थी। आखिर हमने दिनांक 11 दिसंबर, 2022 को अंडमान के लिए प्रस्थान किया।

वर्तमान में सु-विकसित पोर्ट-ब्लेयर हवाई अड्डे के लिए हैदराबाद से सीधी हवाई यात्रा उपलब्ध है। अतः हमने हैदराबाद से ही विमान मार्ग द्वारा अंडमान के लिए यात्रा शुरू की। तकरीबन दो घंटे की उड़ान के बाद हम अंडमान सागर के ऊपर आ गये तो खिड़की से जो नजारा दिख रहा था वह अवर्णनीय था। गहरे नीले रंग का समुद्र, हल्के हरे रंग का उथला समुद्र, तट के पास सफेद रंग की समुद्री लहरें, स्वर्णिम बालु के तट और उसके बाद गहरे हरे रंग के जंगल। आसमान से धरती इतनी सुंदर दिखती है इसका अंदाजा मुझे उसी समय हुआ। ज्यों ही हम पोर्ट ब्लेयर के हवाई अड्डे के नजदीक पहुंचे नजारा बदल गया। समुद्र में इधर उधर आ जा रहे छोटे बड़े जहाज, जहाज का पीछा करती हुई सफेद लहरें, सघन हरियाली के बीच झाँकते हुए लाल और विभिन्न रंग के छप्परों वाले मकान, सर्पीली सड़कें और सड़कों पर दौड़ते वाहन आदि सचमुच में मनभावन थे। सुबह के लगभग 8.30 बजे हमारा विमान पोर्ट ब्लेयर के हवाई अड्डे पर उतरा। हवाई अड्डा दो पहाड़ों की तराई को काटकर बनाया गया है।

कहने को अंडमान और निकोबार एक ही द्वीपसमूह है लेकिन दोनों द्वीपों की टोपोग्राफी बिल्कुल ही भिन्न है। अंडमान द्वीप में पहाड़ी श्रृंखला है लेकिन निकोबार द्वीप समतल है। यह भी मान्यता है कि पूरा पहाड़ी क्षेत्र पूर्व ऐतिहासिक काल में समुद्र में डूब गया था और जो चोटियाँ समुद्र तल से ऊपर रह गई थी वे ही अब द्वीप समूह है।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का कुल क्षेत्रफल 8073 वर्ग किलोमीटर है और पूरा क्षेत्र वर्षा आधारित सघन वनों से आच्छादित है। पेड़ और पत्ते सघन हरियाली लिए हुए हैं और पूरे वर्ष भर हरे-भरे रहते हैं।

अंडमान निकोबार की राजधानी पोर्ट ब्लेयर, एक छोटा और खूबसूरत शहर है। पोर्ट ब्लेयर घनी आबादी

वाला शहर है और पूरे भारत के सभी हिस्सों के लोग यहाँ पर रहते हैं, यदि इसे एक लघु भारत नाम दिया जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। किसी भी अन्य शहर की तरह यहाँ के निर्माण कंक्रीट के हैं, लेकिन अब भी कुछ मकान लकड़ी के देखे जा सकते हैं। कहते है कि पूरा अंडमान निकोबार द्वीप समूह भूकंप प्रभावित होने की वजह से पहले यहाँ मकान और दुकान आदि लकड़ी के बनाए जाते थे।

यहाँ की भाषा हिंदी है और भारत के अन्य भागों से आए लोग अपनी मातृभाषा का भी बहुतायत में प्रयोग करते हैं। यहाँ की आबादी में प्रमुखता बंग्ला भाषियों की है, उसके बाद तमिल भाषी लोगों की जनसंख्या सबसे अधिक है।

अंडमान द्वीप समूह की मूल जनजाति के लोग जैसे जारवा, ओंगी, अंडमानी आदि अब भी प्राकृतिक अवस्था में जंगलों में रहते हैं। निकोबार के मूल निवासी निकोबारी और शोम्पेन हैं, उनमें निकोबारी जनजाति मुख्य धारा से जुड़ गई है और आजकल वे फैशन एवं रहन सहन में आगे निकल आए हैं। शोम्पेन जनजाती अब भी जंगलों में रहती है। सरकार ऊपर उल्लेखित जनजातियों को मुख्य धारा में लाने के लिए भरसक प्रयास कर रही है।

अंडमान में मुख्यतः दो तरह के लोग बसे हुए हैं। प्रथम 1900 से पहले और तुरंत बाद आए लोग और उनकी संतानें, दूसरे भारत सरकार द्वारा बसाये गए परिवार के लोग, जो पूर्वी बंगाल से 1950 के दशक में शरणार्थी के रूप में भारत आए थे।

स्वतंत्रता से पूर्व भारत के विभिन्न प्रान्तों से देश निकाला या कालापानी की सजा देकर कुछ लोगों को यहाँ लाया गया था और सजा खत्म होने के बाद उनकी इच्छानुसार उन्हें अंडमान में ही बसने की अनुमति दी गई थी। उनके वंशज आज पोर्ट ब्लेयर के अधिकतर स्थानों पर रहते हैं और मुख्य धारा से जुड़ चुके हैं। इस घटना को हुए लगभग 170-180 वर्ष हो चुके हैं।

अंडामान में मुख्यतः तीन बड़े-बड़े द्वीप हैं। दक्षिणी अंडमान, मध्य अंडमान और उत्तरी अंडमान। पर्यटन की दृष्टि से दक्षिण अंडमान को प्राथमिकता दी जाती है, क्योंकि मुख्य एयरपोर्ट, बंदरगाह और अधिकतर संस्था यहीं पर हैं। अधिकतर पर्यटक दक्षिणी अंडमान घूम कर वापिस चले जाते हैं। मध्य एवं उत्तर अंडमान के कुछ भाग अब पर्यटन के मानचित्र में जुड़ गये हैं, लेकिन वहाँ जाने में समय और व्यय को देखते हुए अधिक विकसित नहीं हो पाये हैं। पूरा अंडमान द्वीप समूह घनी हरियाली वाला प्रदेश है। हवा में नमी काफी अधिक होने की वजह से पेड़-पौधों के पत्ते चमकदार हरियाली लिए हुए होते हैं।

अंडमान के दर्शनीय स्थान और स्थापनाएंः

1. सेल्यूलर जेल : सबसे पहले हमने अपनी दर्शन यात्रा सेल्यूलर जेल से आरंभ की। अंडमान निकोबार द्वीप समूह को काले पानी के नाम से भी जाना जाता था। सेल्यूलर जेल की भयावहता, मुख्य भूमि से अंडमान निकोबार द्वीप समूह की दूरी और कालापानी की सजा पाने वाले लोगों के न लौटने आदि की वजह से कालापानी काफी बदनाम था। सेल्यूलर जेल कालापानी का पर्याय बन चुका था। अब यह एक राष्ट्रीय स्मारक है और सारी भयावहता को छोड़कर सैलानियों के लिए आकर्षण का केंद्र है। सूरज की किरणों की तरह सात भुजाओं वाले सेल्यूलर जेल को अंग्रेजों के शासन काल के दौरान काले पानी की सजा पाने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को कैद रखने के लिए उपयोग में लाया जाता था। मध्य भाग में एक गुंबद और गोल भवन और उसकी भुजाओं की तरह सात भुजाओं वाले सेल्यूलर जेल के कुछ भाग विभिन्न कारणों से नष्ट हो गए हैं। इस भाग की दीवारों पर उन देश भक्तों के नाम संगमरमर में लिखे गए हैं, जिन्हें इस जेल में रखा गया था। कहा जाता है कि उन देश भक्तों को इस जेल में काफी यातनाएं दी गई थी। इस जेल का बहुत बड़ा भाग 1950 के दशक में आए भूकंप में नष्ट हो गया था। शेष भाग में से कुछ भाग एक सरकारी अस्पताल के निर्माण के लिए ढहा दिया गया था। उसके बाद के भाग में पहले प्रशासन का जेल स्थित था। अब यह राष्ट्रीय स्मारक के रूप में अनुरक्षित है। जेल अब सैलानियों के लिए खुला हुआ है। महान स्वतन्त्रता सेनानी वीर सावरकर का कमरा विशेष रूप से अनुरक्षित है। जेल का फाँसी स्थान जहां कैदियों को फांसी की सजा दी जाती थी भी दर्शकों के लिए खुला है। इसके अलावा जेल के कारखाने जहां कैदियों से काम करवाया जाता था भी सैलानियों के लिए खुले हैं। जेल परिसर में अब वह भयावहता नहीं रह गई है, जिसे सुनकर या सोचकर डर से रूह कांपने लगती थी। फिर भी इस जगह में बसी हुई अशांति आपके मन को जरूर महसूस होगी।

जेल परिसर में प्रतिदिन प्रकाश एवं ध्वनि प्रदर्शन (लाइट और साउंड शो) आयोजित किए जाते थे, जो अंग्रेजों के समय में रही भयावहता और कठिनाईयों को उजागर करते थे। यह प्रदर्शनी कोरोना काल के दौरान

अनिश्चित काल के लिए स्थगित की गई थी। अतः हम इस प्रदर्शनी को नहीं देख पाए।

2. नौसेना संग्रहालय (नेवल म्यूजियम) : यह नौसेना द्वारा संचालित म्यूजियम है, जहां नौसेना से संबंधित उपकरण, जहाजों के मॉडल आदि तथा अन्य कई वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है। नौसेना के अधिकारी सैलानियों को इसके बारे में बताने के लिए उत्सुक रहते हैं। नौसेना द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के उपकरण, नौचालन के पुराने और आधुनिक विभिन्न यंत्र, कम्पास, आदि यहाँ प्रदर्शित हैं। कई वस्तुएं काफी उत्सुकता जगाने वाली थी।

3. आंथ्रोपोलोजिकल संग्रहालय : अंडमान आने वाले सैलानी यदि इसे नहीं देखते हैं तो अंडमान की यात्रा अधूरी रह जाएगी। इस संग्रहालय में अंडमान की जनजातियों जैसे जारवा, अंडमानी, निकोबारी, शोम्पेन, सेंटीनली आदि की शिलायुगीन जीवन शैली और उनके द्वारा प्रयोग किए गए व किए जा रहे उपकरण, तीर कमान, औज़ार आदि देखे जा सकते हैं। यह अंडमान आने वालों के लिए अवश्य देखने योग्य हैं। इनमें से निकोबारी जनजाति को छोड़कर शेष अब भी शिलायुग से बहुत ऊपर नहीं उठ सके हैं। सरकार द्वारा उन्हें मुख्य धारा से जोड़ने के लिए कई उपाय किए जा रहे हैं। लेकिन सफलता अभी दूर है।

4.रॉस आइलेंड : मुख्य शहर पोर्ट ब्लेयर से कुछ ही दूर समुद्र में स्थित रॉस आइलेंड बहुत ही सुंदर द्वीप है, जहां से पूरा खुला समुद्र और मुख्य द्वीप समूह देखना अलग अनुभूति प्रदान करता है। एक किलोमीटर की परिधि का यह द्वीप एक समय अंडमान के अंग्रेजों की सरकार की राजधानी थी। यहाँ अब उन भवनों के खंडहर है, जिन्हें उसी

हालत में सुरक्षित रखा गया है। मुख्य द्वीप से एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस द्वीप में आने के लिए नौका सेवाएँ उपलब्ध है। इस द्वीप पर फोटोग्राफी करने की अच्छी संभावना है। इस द्वीप पर कोई आबादी नहीं है, पूरा द्वीप नौसेना के नियंत्रण में है। भवनों के खंडहरों को उसी हालत में रखा गया है, जिन पर बड़े-बड़े पेड़ों की जड़ें चढ़ चुकी हैं। वहीं इस स्थल पर निडर घूमते हुए हिरण भी दिखाई देते हैं। यह स्थान एक-दो घंटे तक देखने के लिए उपयुक्त है।

5.नार्थ बे आइलेंड : यह आइलेंड रॉस आइलेंड के बिलकुल सामने कुछ दूरी पर नजर आता है। यहाँ कई तरह की जलक्रीड़ाायें (Water Sports) जैसै कि स्नोर्कलींग, स्कूबा डाइविंग, सेमी सबमरीन राइड, जेटस्की राइड उपलब्ध है। पोर्ट ब्लेयर के फिनिक्स बे जेट्टी या मुख्य द्वीप से दो किलोमीटर दूर पर स्थित यह स्थान अपने दीपघर / लाइट हाउस और नारियल के पेड़ों और समुद्री कोरल रीफ के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ विभिन्न प्रकार की दुकानें हैं। अंडमान की स्थानीय वस्तुओं के रूप में सीप से बनी वस्तुएँ और हस्त निर्मित वस्तुएँ खरीदने के लिए यहाँ पर काफी सारी दुकानें हैं।

6. चिड़िया टापू : मुख्य शहर से 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह स्थान समुद्री खाड़ी और मैंग्रोव के पौधों/पेड़ों के लिए काफी मशहूर है। यहाँ से सूर्यास्त का दृश्य अविस्मरणीय होता है। जैसे कि नाम से पता चलता है यह पक्षियों की विहार स्थली थी। 2004 में आई सुनामी के बाद चिड़िया टापू का काफी भाग समुद्र में डूब चुका है, लेकिन अब भी मेंग्रोव के पेड़ सर उठाये खेड़े हैं। चिड़िया टापू जाते समय मशहूर काला पहाड़ की तराई से होकर जाना पड़ता है। काले-काले पत्थरों की वजह से ही काला पहाड़ का नामकरण हुआ है।

7. स्वराज द्वीप (हैवलोक आइलेंड): पोर्ट ब्येयर से 30 किलोमीटर दूर स्थित हैवलोक एक अलग द्वीप है। सफेद बालू

से भरे यहाँ के बीच पोर्ट ब्लेयर से लगभग तीन घंटे की दूरी पर हैं, जहां केवल जहाज/ बोट से ही पहुंचा जा सकता है। मुख्य द्वीप से दूर स्थित हैवलोक सफ़ेद रेत (बालू) के लिए काफी मशहूर है। प्रदूषण रहित सफ़ेद रेत और समुद्र का स्वच्छ नीला पानी और लहरों के झाग आदि बरबस लोगों को आकर्षित करते हैं। यदि चाँदनी रात हो तो रात के समय चाँद की रोशनी में रेत के कण चमकते हैं और एक बिल्कुल अलग दैवीय अनुभूति प्रदान करता है। यहाँ कई बीच (समुद्र तट) हैं, जिनमें से मुख्य राधा नगर बीच, गोविंद नगर बीच, एलीफेंटा बीच, विजय नगर बीच आदि हैं। इनमें से राधा नगर बीच को टाइम्स मैगज़न द्वारा एशिया का सबसे अच्छा बीच माना गया है। यहाँ भी स्कूबा डाइविंग, स्नोर्कलींग, बनाना राइड, स्पीड बोट, डोरी से मछली पकड़ने आदि जलक्रीड़ाओं (Water Sports) की सुविधाएं उपलब्ध है।

8.शहीद द्वीप (नील आइलेंड) : हेवलोक आइलेंड से करीब एक घंटा तीस मिनट की क्रूज द्वारा यात्रा करने के बाद हम शहीद द्वीप पहुँचे। इस आईलेंड को "वेजिटेबल बॉउल ऑफ अंडमान (Vegetable bowl of Andaman)" भी कहा जाता है। यहाँ की व्यापक साग-सब्जियों की फसल को ध्यान में रख इस द्वीप के लिए यह नाम सुयोग्य है। यहाँ की मिट्टी को सरकार द्वारा आर्गेनिक सॉइल/जैविक मिट्टी घोषित किया गया है और यहाँ से ही मुख्यतः पूरे अंडमान में सब्जियों की आपूर्ती की जाती है। यहॉं के मुख्य दर्शनीय स्थल लक्ष्मणपुर बीच, भरतपुर बीच एवं नेचुरल रॉक ब्रीज फॉर्मेशन है। लक्ष्मणपुर बीच पर आप कांच की तरह पारदर्शी पानी में तैरते कई रंग-बिरंगी मछलियों के झुंड को किनारे पर से ही देख पाएंगे।

9. बाराटांग : दक्षिण और मध्य अंडमान के बीच स्थित बाराटांग नामक द्वीप एक प्राकृतिक रमणीय स्थान है, जो मैंग्रो वनों से घिरा हुआ है। पोर्ट ब्लेयर से लगभग 100 किलोमीटर दूर स्थित यह स्थान रोड मार्ग और जल मार्ग से जुड़ा हुआ है। इस स्थान पर सैलानी मड वोलकेनो (Mud Volcano) देखने के लिए बडी संख्या में आते हैं। मड वोलकेनो समुद्र में आने वाले ज्वार भाटे से प्रभावित होते हैं। कीचड़ भरी जमीन पर एक-दो से चार फीट तक मिट्टी और कीचड़ ऊपर उठता है और थोड़ी ही देर में फूट जाता है, जिनमें से पानी और हवा तेजी से बिखरते हैं। बाराटांग आबादी वाला और चारों ओर से घनी हरियाली से आच्छादित क्षेत्र है।

पोर्ट ब्लेयर से बाराटांग तक की सड़क अंडमान की मूल जनजाति "जारवा" इलाके से गुजरती है। जारवा जनजाति अभी भी शिलायुग की अवस्था में ही गुजर बसर करती हैं और उनका जीवन मुख्य धारा से अभी भी काफी पीछे है। अक्सर उन्हें सड़कों पर झुंड में अर्धनग्न अवस्था में विचरण करते हुए देखा जा सकता है।

अंडमान की जलवायु केरल और मुंबई की जलवायु जैसी ही है। स्वेटर या ऊनी कपड़ों की जरूरत नहीं है। हवा में नमी अधिक होने के कारण शरीर से हमेशा पसीना निकलता रहता है और धूप में घूमने पर त्वचा का रंग

काला होने की संभावना रहती है।

हम वापस आने के लिए हवाई अड्डे पर पहुंचे तो हमें यह एहसास हो रहा था कि हम खूबसूरत प्राकृतिक नजारों, प्रदूषण रहित नीले समुद्र, हरियाली एवं यहाँ की विशाल जैववैविध्य की बहुत सी यादें लेकर जा रहे हैं।

हवाई जहाज जब आसमान में था तो हम भाव विभोर होकर खिड़की से बंगाल की खाड़ी में बिखरे मोतियों समानद्वीपों को निहार रहे थे। शायद ये यादें वर्षों तक हमारे दिलो दिमाग पर छाई रहेंगी।

*** ***** ***

अच्छाई एक न एक दिन अपना असर जरूर दिखाती है,
भले ही थोड़ा वक्त ले ले !
बस सब्र का दामन थाम कर रखें,
वक्त आपका ही होगा...!!!

*****

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में सिनेमा की भूमिका

--- श्री नर बहादुर, कार्यालय अधीक्षक

हिंदी भाषा के अंतर्राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार में हिंदी चलचित्र का महत्वपूर्ण योगदान है। सुप्रसिद्ध फिल्मकार गुलजार के अनुसार हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में चलचित्र ने साहित्य से ज्यादा काम किया है। हिंदी फिल्मों ने ही हिंदी भाषा को संपर्क भाषा बनाया है। इतना काम तो साहित्य अकादमी और नेशनल बुक ट्रस्ट जैसी संस्थाओं ने भी नहीं किया। उन्होंने कहा कि इसके कई पक्ष हैं, जिसमें एक तत्व भाषा का है, जो निरंतर परिवर्तनशील है। सिनेमा की अपनी भाषा होती है-छवियों की, दृश्यों की। इस माध्यम की अपनी शर्तें हैं जो साहित्य से अलग हैं। सिनेमा भाषा की कोई भी पोशाक ओढ़ लेती है, पर पहले वह सिनेमा होती है।

गुलज़ार ने आज की हिंदी फिल्मों और गीतों की भाषा के गिरते स्तर से इनकार करते हुए कहा कि सिनेमा पर आरोप लगाने से पहले हमें खुद को अपने समाज के आइने में देखना चाहिए। सिनेमा भाषा नहीं बनाती, वह केवल भाषा को अभिलिखित (रिकॉर्ड) करती है, प्रतिबिंबित (रिफ्लेक्ट) करती है। उन्होंने पूछा कि जब आज "मौसम", "आंधी", जैसी फिल्में ही नहीं बन रहीं तो वैसे गीत कहाँ से लिखे जाएँगे। सिनेमा समाज की आवाज दर्ज करती है और इतिहास बनाती है। भाषा के बदलाव को सिनेमा पहले दर्ज करती है, साहित्य बाद में।

उन्होंने कहा कि आज के फिल्मी गानों में सतही होने पर मत जाइए, उसके पीछे मंतव्य देखिए क्योंकि सिनेमा भाषा को आगे की बात दिखाती है। सिनेमा वही भाषा बोलती है जो अपने-अपने दौर के समाज से उसने ग्रहण किया है। जापान के हिंदी विद्वान तोमियो मिजोकामी ने हिंदी फिल्मों के तीन सौ गानों का तकनीकी संकलन किया है, उनका कहना है कि इससे विदेशों में हिंदी भाषा का शिक्षण आसान और दिलचस्प हो गया है।

सिनेमा ने हिंदी से दूर भागने वालों को हिंदी से जोड़ा है। मनोरंजन उद्योग में हिंदी की भागीदारी व बढ़ोत्तरी को नकारा नहीं जा सकता है। हिंदी दूर दर्शन पद्धतियों (टीवी चैनलों) ने हिंदी की क्षमता बढ़ाई है। अमेरिका के हिंदी शिक्षकों के अनुसार अनिवासी भारतीयों(NRI) से संबंधित अधिकतर छात्र अर्थात् अनिवासी भारतीयों के बच्चे हिंदी फिल्में देखने तथा अपने रिश्तेदारों से बात करने के लिए हिंदी सीखना चाहते हैं। सिनेमा के समाजशास्त्रीय योगदान बहुत ही महत्व पूर्ण है, सिनेमा के लिए काम करने वाले श्रेष्ठ लेखकों का साहित्यकार के रूप में सम्मान किया जाना चाहिए।

*** ***** ***

वक्त नहीं

--- श्री बी.सी.परिडा, निदेशव

आज की इस दिन-रात की भाग-दौड़ भरी दुनिया में,
खुद की जिंदगी के लिए वक्त नहीं ।
बिखरी हैं खुशियाँ चारों ओर,
पर उन्हें समेटने का वक्त नहीं ।
खुशियाँ तो बहुत हैं हमारे दामन में,
पर मुस्कुराने के लिए वक्त नहीं ।
न जाने किसमें इतना व्यस्त हैं,
उसे जानने का भी वक्त नहीं ।

माँ की ममता को तो जानते हैं,
पर उसे महसूस करने का वक्त नहीं ।
रिश्तों को मार तो रहे हैं हम,
पर उन्हें दफनाने का वक्त नहीं ।
दोस्ती करते हैं हम सब से,
पर दोस्ती निभाने का वक्त नहीं ।
साथ चलते हैं कुछ कदम,
पर उम्र भर साथ चलने का वक्त नहीं।

वादा तो करते हैं हम,
पर उसे निभाने का वक्त नहीं ।
खुशी में सारे साथ तो देते हैं,
पर दुःख दूर करने का वक्त नहीं ।
घाव देना तो सब जानते हैं,
पर मरहम लगाने का वक्त नहीं ।
कोसों दूर खड़े रह जाते हैं,
पर पास आने का वक्त नहीं ।

भागती दुनियाँ की इस दौड में,
आराम के लिए भी वक्त नहीं ।
दूसरों की क्या बातें करें,
जब अपनों के लए ही वक्त नहीं।
आगे तो बढ़ते जा रहे हैं
पर पीछे मुड़कर देखने का वक्त नहीं।
अपने आप को भँवर में छोड़कर
उससे उभरने का वक्त नहीं ।

भविष्य की क्या कदर करें,
जब अपने सपनों के लिए वक्त नहीं ।
हाँ हम में है हौसला बहुत,
पर उड़ने के लिए वक्त नहीं ।
हूँ मैं आज किस असमंजस में पडा,
यह जानने का वक्त नहीं ।
जिन बातों को चाहता था करना बयां,
सोचता हूँ क्या उन्हें भी व्यक्त करने का वक्त नहीं ?

*****

मूल्यवान कौन

---श्रीमती पी.के.प्रतिभा, कार्यालय अधीक्षक

एक बार नंबरों के बीच बहस छिड़ गई। नंबर एक से दो ने कहा, "मैं तुमसे बड़ा हूँ।"
तीन झट से बोला, "अपनी तारीफ़ करना बंद करों, मैं तुम दोनों से बड़ा हूँ।"
तभी नंबर चार बोला, "मैं क्या तुमसे हीन हूँ ?, तुम्हीं मुझ से हीन हो।"
नंबर पाँच हँसते-हँसते बोला-"मेरे आगे तुम कुछ भी नहीं।
मैं तुम चारों से महान हूँ। तुमसे अधिक मूल्यवान हूँ।"
छह, सात, आठ और नौ भला कैसे चुप रहते। प्रत्येक अंक को अपना ही मूल्य बड़ा और अधिक लगा।
सब बढ़-चढ़कर बोलने लगे।
जीरो ने कुछ कहने के लिए अपना मुँह खोला तो सारे के सारे अंक उस पर बरस पड़े,
"जीरो, तुम तो शून्य हो ! तुम हमारे साथ रहने योग्य नहीं हो।"
जीरो मुस्कुराते हुए बोला, "मैं मानता हूँ, मैं शून्य हूँ। मेरा कुछ भी मूल्य नहीं। मैं आपके आगे नहीं पीछे रहूँगा। मुझे भी अपने साथ रहने दो।"
सभी अंक बोले, "ठीक है पर तुम हमारे पीछे ही रहना, हमारे आगे आने की कोशिश मत करना।"
जीरो एक-एक करके सभी अंकों के पीछे लगता गया।
अरे ! यह क्या ? यह तो - 10,20,30,40,50,60,70,80,90 बन गए।

अंकों को यह अनोखी बात समझ में आई। वे सोचने लगे, जब हम अकेले थे हमारा मूल्य बहुत कम था। मगर ज़ीरो के हमारे पीछे आते ही हमारा मूल्य कई गुना बढ़ गया। इसी तरह बाकी अंकों के साथ भी मिलजुलकर रहने से हमारा मूल्य और बढ़ेगा।

इसलिए किसी को छोटा नहीं समझना चाहिए, सभी से मिलजुल कर रहना चाहिए।

*****

मनौती

---श्री जेकब थॉमस, कार्यालय अधीक्षक

यह बहुत ही पुरानी कहानी एक किसान की मनौती के बारे में है।

एक गाँव में एक किसान था। उसकी पत्नी एक बार बीमार पड़ी। दवा-दारू की गई।कोई फायदा न हुआ। इस पर किसान उस गाँव के मंदिर पर गया। भगवान के सामने हाथ जोड़ कर मनौती किया कि, "अगर उसकी पत्नी की बीमारी दूर हो जाएगी तो वह अपनी एकमात्र गाय को बेच देगा और उससे जो रुपये मिलेंगे उसे मंदिर की हुंडी में डाल देगा।"

इस मनौती के बाद किसान की पत्नी जल्द ही स्वस्थ हो गई। किसान को अपनी मनौती चुकानी थी। वह गाय के साथ एक बिल्ली को भी लेकर हाट में पहुँचा। वहॉ पर कोई गाय को खरीदने आया। गाय का मोलभाव किया। किसान ने कहा, गाय का दाम एक रुपया है पर बिल्ली को खरीदे बिना गाय खरीदी नहीं जा सकती, बिल्ली का दाम सौ रुपये हैं। गाय का दाम भी सौ रुपये से कम न हो सकता था। इसलिए ग्राहक ने 101 रुपये देकर बिल्ली और गाय को खरीद लिया। किसान ने मंदिर की हुंडी में गाय का दाम एक रुपया डाल दिया। बचे हुए सौ रुपए देकर एक और गाय खरीद लिया। फिर वह आराम से अपने दिन काटने लगा।

*****

पादटिप्पणी : हाट, हटिया या पेठिया आमतौर पर भारत के गाँवों में लगनेवाले स्थानीय बाजार को कहा जाता है।

आदि शंकराचार्य

--- श्री श्रीहरि रेड्डी, आशुलिपिक, ग्रेड-II

आदि शंकराचार्य जी का जन्म एक गरीब मलयाली ब्राह्मण परिवार में सन् 788 ई में, केरल के आधुनिक एर्नाकुलम ज़िले में कालडी नामक एक गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम शिवगुरु था जो कि शास्त्रों में प्रवीण थे और माता का नाम आर्याम्बा था। शिवगुरु और आर्याम्बा के विवाह के कई वर्ष बाद तक उनके यहां कोई संतान नहीं हुई। तब उन्होंने भगवान् शिव से एक पुत्र प्राप्ति की प्रार्थना की और उनकी प्रार्थनओं का उत्तर उन्हें वसंत ऋतु के शुभ अभिजीत महूर्त में एक बालक के रूप में मिला।

शंकर मुश्किल से सात वर्ष के थे जब उनके पिता का निधन हो गया था। उनकी माता जी ने उनकी उचित शिक्षा का पूरा ध्यान रखा जैसी कि एक तरुण ब्राह्मण से अपेक्षा की जाती थी । शंकर एक असामान्य बुद्धि के स्वामी थे, बहुत उम्र से ही सन्यासी बनने की ठान ली थी। इससे उनकी माताजी बहुत दुखी हुई पर कुछ घटनाओं ने उनके निर्णय को परिवर्तन कर दिया। एक दिन शंकर और उनकी माँ नदी में नहाने गए। जब शंकर वहाँ नहा रहे थे तभी अचानक एक घड़ियाल ने उनका पाँव पकड़ लिया और उनको नीचे पानी के अंदर घसीटने लगा। तब शंकर ने माँ को पुकारते हुए कहा कि वो उनको सन्यासी बनने की आज्ञा दे दें नहीं तो मगरमच्छ उनको खा जाएगा। तब माँ झटपट मान गयीं और उनके हाँ करते ही घड़ियाल ने शंकर का पाँव छोड़ दिया। तब शंकर केवल आठ वर्ष के थे।

अब शंकर अपने संन्यास का आरम्भ करने के लिए तैयार थे। उन्होंने अपनी माँ की जिम्मेदारी रिश्तेदारों को यह आश्वासन देते हुए सौंप दी कि वे उनकी मृत्यु शैय्या पर उनकी देखभाल जरूर करेंगे और उनके अंतिम-संस्कार भी अपने हाथों से करेंगे। फिर वे एक गुरु की तलाश में निकल पड़े। शंकर हिमालय पर्वतों के बीच बद्रीनाथ के पास एक आश्रम में आचार्य गोविन्दपाद से मिले जो कि उनके भावी गुरु थे। जब गोविन्दपाद ने शंकर से पूछा कि वे कौन हैं तो उन्होंने उत्तर दिया कि न तो वे अग्नि, न वायु, न पृथ्वी और न ही पानी हैं बल्कि हर नाम और हर रूप के अंदर की अमर आत्मा हैं। बाद में उन्होंने अपना पता बताया। स्वामी गोविन्दपाद ने, उस युवा आकांक्षी से प्रसन्न होकर उनको दीक्षा देकर सन्यासी बना दिया। शंकर ने अद्वैत का दर्शन शास्त्र सीखा और बाद में इस ज्ञान का खूब प्रचार-प्रसार किया। इसके बाद वे काशी यानी वाराणसी चले गए जहाँ पर उन्होंने भगवद् गीता, ब्रह्म सूत्र और उपनिषदों के ऊपर टिप्पणी लिखीं।

जब शंकराचार्य काशी में वास कर रहे थे तो कहा जाता है कि उनका सामना एक चांडाल (जाति से निकाला

हुआ व्यक्ति) से हुआ। हुआ यूँ कि एक दिन जब शंकर अपने शिष्यों के साथ एक संकरी गली से निकल रहे थे तो अचानक उन्होंने एक चांडाल को अपने सामने पाया। उन दिनों प्रचलन के हिसाब से एक चांडाल का ब्राह्मण से सामना होने पर चांडाल को एक किनारे होकर ब्राह्मण को रास्ता देना होता था ताकि ब्राह्मण उसकी बुरी छाया से दूषित न हो जाए। शंकर ने चांडाल को एक तरफ सरक जाने को कहा। तभी उनको अचंभित करते हुए उस व्यक्ति ने उनको डांटते हुए कहा, "अरे भले ब्राह्मण, तुम होते कौन हो मुझे किनारे हटने को कहने वाले ?, ये तुम्हारा बलवान शरीर जो भोजन से बना हुआ है, अपने आप हिल नहीं सकता तो शुद्ध चैतन्य जिसका मैं बना हुआ हूँ, भी तुम्हारे कहने से हिल नहीं सकता। तुम किसको रास्ता साफ करने के लिए कह रहे हो और किसके लिए ?" यकायक शंकराचार्य को अपनी भूल का अहसास हुआ और वो चांडाल के सामने दंडवत हो गए। कहा जाता है कि असल में भगवान् शिव चांडाल का रूप धारण करके आए थे जिनको शंकरचार्य ने बाद में पहचान लिया । उनका विजयी देशाटन पूर्ण होने के बाद, अंततः शंकर को "सर्वजन पीठ (Seat of omniscience)" का नेतृत्व सौंप दिया गया। शंकर ने ज्ञान के प्राधिकारियों के आगे अपने तर्क रखे और अपने विचारों और खंडनों से उन्होंने प्राधिकारियों को आसानी से पराजित कर दिया।

अपनी यात्रा के दौरान शंकराचार्य महिष्मति गए जहाँ उनका सामना महिष्मति के दरबार के मुख्य पंडित मंडन मिश्र से हुआ। मंडन मिश्र सन्यासियों से सख्त नफरत करते थे। शंकर ने मंडन को एक वाद-विवाद की चुनौती दी जिसमें मंडन की विद्वत्तापूर्ण पत्नी भारती, निर्णायक बनीं। यह तय कर लिया गया था कि अगर शंकराचार्य पराजित होंगे तो विवाह करके एक गृहस्थ का जीवन अपना लेंगे और अगर मंडन मिश्र पराजित होते हैं तो वह सन्यासी का रूप अपना लेंगे। उनके बीच में वाद-विवाद बहुत दिनों तक चलता रहा और अंत में शंकराचार्य विजयी घोषित किए गए। कहा जाता है कि असल में मंडन की पत्नी भारती विद्या की देवी सरस्वती का अवतार थीं। मंडन मिश्र जैसा कि पूर्वतः तय हुआ था, शंकराचार्य से दीक्षा प्राप्त करके सन्यासी हो गए और उनका नाम सुरेश्वर रखा गया। इस प्रकार शंकराचार्य ने विभिन्न समुदायों के ऊपर विजय प्राप्त करके अपने अद्वैत दर्शन-शास्त्र को स्थापित किया। जब शंकराचार्य को अपनी माँ के अस्वस्थ होने की सूचना मिली तो वे वचनानुसार तुरंत अपनी माँ से मिलने कालडी चले गए। उन्होंने माँ को सांत्वना दी और आश्वासन दिया कि उनको मुक्ति प्राप्त होगी। ऐसा कहा जाता है कि शंकराचार्य ने अपनी माँ को अद्वैत-दर्शन सिखाने की कोशिश की पर सफल नहीं हुए। तब उन्होंने शिव और विष्णु के भजनों का जाप करना शुरू किया और अपनी माँ की निर्भय होकर मौत का सामना करने में मदद की। जब शंकर ने अपनी माँ की अन्त्येष्टि-क्रिया करनी चाही तो ब्राह्मण समाज ने उसका विरोध किया क्योंकि प्रचलन के अनुसार एक व्यक्ति के सन्यासी बन जाने के पश्चात् उसके सभी पारिवारिक सम्बन्ध खत्म हो जाते हैं। किसी की परवाह न

करते हुए शंकराचार्य ने माँ की अंतिम क्रिया अपने आप करने की ठानी। शरीर को कई भागों में विभाजित करके वे उनको घर के पिछवाड़े में ले गए। जब ब्राह्मणों ने उनको अग्नि देने से मना कर दिया तो शंकराचार्य ने अपनी योग शक्ति से अग्नि उत्पन्न करके अपनी माँ का दाह-संस्कार किया।

शंकराचार्य ने भारत के चार कोनों में चार मठों की स्थापना की। उत्तर में जोशी मठ, पूरब में पुरी मठ, पश्चिम में द्वारका मठ और दक्षिण में श्रृंगेरी मठ। उन्होंने अपने चार शिष्यों त्रोटकाचार्य, पदमपद, हस्तमलाका और सुरेष्वराचार्य को क्रमशः इन चार मठों का कार्यभारी बना दिया। हिमालय पर्वतों के बीच जोशी मठ और बद्रीनाथ मंदिर का निर्माण करने के बाद शंकराचार्य हिमालय पर्वतों की ऊँचाइयों की तरफ प्रस्थान कर गए और वहां उन्होंने 32 वें वर्ष में अपनी देह त्याग दी।

उनके लेखन सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों को प्रतिपादित करते हैं। विवेक चूड़ामणि, आत्मबोध, अपरोक्षानुभूति, आनंद लहरी और उपदेश साहस्री उनके मुख्य लेखनों में से हैं। इसके अलावा उन्होंने कई गहरे अर्थ वाले भजनों की भी रचना की।

शंकराचार्य ने निम्नलिखित ग्रंथों पर भाष्य लिखा हैः-

- ब्रह्मसूत्र पर ब्रह्मसूत्रभाष्य नामक भाष्य
- ऐतरेय उपनिषद्
- बृहदारण्यक उपनिषद्
- ईश उपनिषद् (शुक्ल यजुर्वेद)
- कठोपनिषद् (कृष्ण यजुर्वेद)
- केनोपनिषद् (सामवेद)
- छान्दोग्य उपनिषद् (सामवेद)
- माण्डूक्य उपनिषद् तथा गौडपादकारिका
- मुण्डक उपनिषद् (अथर्ववेद)
- प्रश्नोपनिषद् (अथर्ववेद)
- भागवद्गीता (महाभारत)
- सानत्सुजातिय (महाभारत)
- गायत्री मंत्र

शंकराचार्य ने इनके अलावा अनेक प्रकरण जैसे विवेकचूड़ामणि, उपदेशसाहस्री आदि और शिव, विष्णु, देवी, गणेश, एवं सुब्रमण्य की स्तुति जैसे बहुत से ग्रन्थों की रचना की।

श्री शंकराचार्य के शिक्षण का सारांश निम्न शब्दों में किया जा सकता है :-

"ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः"

अर्थात्

"ब्रह्म ही सत्य है, यह जगत एक मिथ्या है।

जीव और ब्राह्मण एक दूसरे से भिन्न नहीं हैं।"

शंकराचार्य उज्ज्वल चरित्र के सच्चे संन्यासी थे, जिन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की। 32 वर्ष की आयु में उनका देहावसान हो गया। उनका अंतिम उपदेश था,

"हे मानव ! तू स्वयं को पहचान, स्वयं को पहचानने के बाद तू ईश्वर को पहचान जाएगा ।"

*** ***** ***

जिस समस्या का हल समझ में ना आए.....
उसे वक्त और ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए, यकीनन.....
परिणाम सदैव अच्छा ही होगा ।

*****

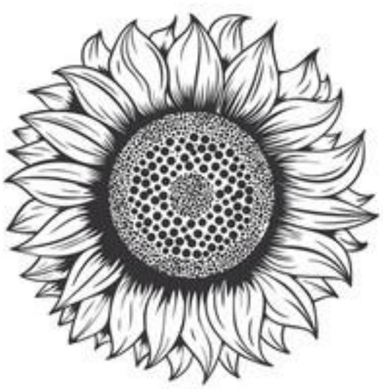

जगदीशचंद्र बोस

--- कुमारी एस. भाग्यश्री
पुत्री
श्री एस.रामा अप्पाराव, कार्यालय अधीक्षक

एक वैज्ञानिक ने प्रयोग कर दिखा दिया कि पेड़-पौधे भी मनुष्य की तरह साँस लेते हैं, सुख-दुःख का अनुभव करते हैं और थकने पर विश्राम चाहते हैं। वह वैज्ञानिक भारत का था और उनका नाम था जगदीशचंद्र बोस।

जगदीशचंद्र बोस को पश्चिम के वैज्ञानिकों ने "पूरब का जादूगर" कहा। उनका जन्म 19 वीं शताब्दी के मध्य में ढाका में हुआ था। उस समय ढाका भारत का नगर था।

जगदीशचंद्र बोस की पढ़ाई-लिखाई स्वदेश में हुई पर उच्च शिक्षा के लिए वे विदेश गए। वहाँ विदेशी वैज्ञानिकों के साथ काम भी किया। स्वदेश लौटने पर कोलकाता में विज्ञान के प्राध्यापक बने। उन्होंने धातुओं के संबंध में भी महत्वपूर्ण खोज की। उन्होंने यंत्र बनाकर दुनिया को दिखा दिया कि पेड़-पौधे भी सर्दी, गर्मी और चोट का अनुभव करते हैं। इस खोज पर उन्हें डी.एस-सी. की उपाधी मिली। उन्होंने कोलकाता में शोध-संस्थान स्थापित किया। वे देशभक्त और त्याग की मूर्ति थे। बीसवीं शताब्दी के मध्य में वे चल बसे, मगर प्रकाश-स्तंभ के रूप में उनके आदर्श उन्हें अमर बनाए हुए हैं।

*****

हिंदी पखवाड़ा-समारोह-2022

--- कार्यालय सूचना

भौगोलिक सूचना पद्धति और सुदूर संवेदन निदेशालय (मोटिवेशन हॉल) में, दिनांक 30-9-2022 को हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह का आयोजन किया गया। श्री जी.वरुण कुमार, उप महासर्वेक्षक, राष्ट्रीय भू-सूचना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (NIGST), मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री बी.सी.परमार, सर्वेक्षक द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि तथा मंच पर आसीन गणमान्य अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

हिंदी पखवाड़े के समापन तथा पुष्पांजलि पत्रिका के विमोचन समारोह में सब का हार्दिक स्वागत करते हुए श्री एम.संतोष, अधीक्षण सर्वेक्षक ने मुख्य अतिथि का परिचय देते हुए समारोह के लिए समय निकालकर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होने पर उनका आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि कोविड संबंधी अनुदेशों का अनुपालन के कारण कुछ एक समारोहों का आयोजन सीमित सदस्यों की उपस्थिति में किया जा रहा है। परिस्थितियां बदल रही हैं, धीरे-धीरे सब कुछ सामान्य होता जा रहा है, यह अच्छी बात है।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए श्री परामार जी ने हिंदी भाषा के बारे में प्रकाश डालते हुए खड़ीबोली, अपभ्रंश, अवधी, ब्रजभाषा आदि के बारे सभासदों को अवगत कराया। बाद में श्री बी.सी.परिडा, निदेशक, भौगोलिक सूचना पद्धति और सुदूर संवेदन निदेशालय तथा अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि श्री परमार ने हिंदी भाषा के बारे में काफी जानकारी दी है। हिंदी पूरे देश में संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित है और बहुत सारी श्रेणियों के लोगों में अपने विचार हिंदी भाषा में व्यक्त करने की क्षमता है। हिंदी के कारण समाज के विभिन्न श्रेणियों के लोगों में तालमेल व सामंजस्य संभव हो पाया है। इस बहुभाषी देश की प्रगति व देश के नागरिकों में भाईचारे की भावना को बनाए रखने के लिए एक माध्यम अर्थात् एक संपर्क भाषा की आवश्यकता है। दक्षिण के बहुत सारे लोग हिंदी को अपनाने में कठिनाई महसूस करते हैं, लेकिन धीरे-धीरे अभ्यास के साथ आसान हो जाता है। समारोह में हमारे निदेशालय की राजभाषा गृहपत्रिका पुष्पांजली के वार्षिक अंक का भी विमोचन किया जा रहा है। इसकी अंकीय प्रति (डिजिटल कॉपी) हम भारतीय सर्वेक्षण विभाग के कार्यालयों को भेजेंगे।

अध्यक्ष महोदय के संबोधन के उपरांत मुख्य अतिथि द्वारा पत्रिका का विमोचन किया गया तथा हिंदी शिक्षण योजना से प्राप्त, प्राज्ञ व प्रबोध परीक्षा से संबंधित प्रमाण पत्र उत्तीर्ण कर्मचारियों को प्रदान किए गए। पुष्पांजलि-2022 में प्रकाशित उत्तम लेख के रचनाकार को भी पुरस्कार प्रदान किया गया।

बाद में संचालानकर्त्ता श्री परमार ने गुजरात के सूरत में दिनांक 14-15 सितंबर, 2022 को आयोजित हिंदी दिवस समारोह एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में सम्मिलित इस निदेशालय के वरिष्ठ अधिकारियों से अपने अनुभव के बारे में बताने हेतु अनुरोध किया। श्री देव कुमार, उरॉव, अधीक्षण सर्वेक्षक ने अपने भाषण में विस्तार से पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम, सूरत (गुजरात) में आयोजित हिंदी दिवस समारोह के उद्‌घाटन सत्र के बारे में बताया। सम्मेलन से संबंधित निमंत्रण पत्र, कार्यक्रम, स्मारिका व अन्य राजभाषा पत्रिकाओं को दर्शाते हुए उन्होंने कहा कि, भारत सरकार के माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह मुख्य अतिथि के रूप उपस्थित थे, विशिष्ट अतिथि गण जैसे गुजरात सरकार के माननीय मुख्य मंत्री भूपेन्द्र भाई पटेल, श्री नित्यानंद राय माननीय गृह राज्य मंत्री आदि प्रमुख व्यक्ति विशिष्ट अतिथियों के रूप में मंच पर आसीन थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम में दस हजार से भी अधिक लोग श्रोतागण के रूप में उपस्थित थे। क्षमता से भी अधिक भीढ़ रही, फिर भी आयोजन सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। मध्याह्न भोजन के बाद तथा दूसरे दिन सम्मेलन कक्षाओं में प्रकाण्ड विद्वानों द्वारा राजभाषा हिंदी से संबंधित अलग-अलग विषयों पर भाषण दिए गए। बहुत ही अच्छा अनुभव रहा। इस सम्मेलन में भाग लेने का अवसर देने के लिए निदेशक महोदय का उन्होंने धन्यवाद किया।

तदुपरांत सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री वरुण कुमार, उप महासर्वेक्षक, राष्ट्रीय भू-सूचना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (NIGST) ने इस आमंत्रण और गौरव के लिए आभार व्यक्त किया। समापन समारोह तथा गृहपत्रिका के विमोचन पर सभाध्यक्ष का अभिनंदन करते हुए उन्होंने कहाकि यह बहुत ही अच्छा प्रयास है, पत्रिका के प्रकाशनार्थ सामूहिक योगदान की आवश्यकता है, प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। इस पत्रिका की फ्लिपबुक (Flip pdf)को साझा करने की उन्होंने बात कही। हिंदी भाषा सभी को जोडती है, भाषाओं की सांस्कृतिक ताना-बाना के साथ हिन्दी संपर्क भाषा के रूप में विराजमान है।

श्री पी.एम.पराते, अधीक्षण सर्वेक्षक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। जलपान के साथ हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह संपन्न हुआ।

*****

पदोन्नत / उन्नयन प्राप्त अधिकारियों / कर्मचारियों की सूची

क्रम संख्या	नाम सर्व श्री / श्रीमती	पदनाम	पदोन्नति की तिथि	पद जिस पर पदोन्नत हुए
1.	एम.शंकर	अधिकारी सर्वेक्षक	22-09-2022	अधीक्षण सर्वेक्षक (तदर्थ)
2.	पी.एम.पराते	अधिकारी सर्वेक्षक	22-09-2022	अधीक्षण सर्वेक्षक (तदर्थ)
3.	डी.के.उरॉव	अधिकारी सर्वेक्षक	22-09-2022	अधीक्षण सर्वेक्षक (तदर्थ)
4.	ए.के.लाल	अधिकारी सर्वेक्षक	06-10-2022	अधीक्षण सर्वेक्षक (तदर्थ)
5.	सुभाष जार्ज	अधिकारी सर्वेक्षक	19-10-2022	अधीक्षण सर्वेक्षक (तदर्थ)
6.	स्वपन चौहान	सर्वेक्षक	03-02-2023	अधिकारी सर्वेक्षक
7.	नर बहादुर	प्रवर श्रेणी लिपिक	19-10-2022	सहायक
8.	डी.नागतेजा	अवर श्रेणी लिपिक	02-01-2023	प्रवर श्रेणी लिपिक
9.	डी.चिन्ना मौलाली	भंडार पाल ग्रेड-IV	01-01-2023	भंडार पाल ग्रेड-III
10.	पी.सुब्बारायुडु	अभिलेख पाल ग्रेड-IV	01-01-2023	अभिलेख पाल ग्रेड-III

स्थानांतरण पर तैनात अधिकारियों / कर्मचारियों की सूची

क्रम संख्या	नाम सर्व श्री / श्रीमती	वर्तमान पद	स्थानांतरण की तिथि	स्थानांतरण	
				जहां से	जहां को
1.	ए.के.लाल	अधिकारी सर्वेक्षक	06-10-2022	रा.भू.वि.एवं प्रौ.सं.(NIGST) हैदराबाद	भौ.सू.प. और सु.सं.नि. हैदराबाद
2.	जी.वेंकट रंगा राव	पटल चित्रक ग्रेड IV	13-10-2022	आं.प्र. और ते.जीडीसी हैदराबाद	भौ.सू.प. और सु.सं.नि. हैदराबाद
3.	स्पेस गुप्ता	उप अधीक्षण सर्वेक्षक	09-11-2022	रा.भू.वि.एवं प्रौ.सं.(NIGST) हैदराबाद	भौ.सू.प. और सु.सं.नि. हैदराबाद
4.	मंजुल ममगाई	अधिकारी सर्वेक्षक	11-04-2023	महासर्वेक्षक कायालय देहरादून	भौ.सू.प. और सु.सं.नि. हैदराबाद

स्थानांतरित अधिकारियों / कर्मचारियों की सूची

क्रम संख्या	नाम सर्व श्री / श्रीमती	वर्तमान पद	स्थानांतरण की तिथि	स्थानांतरण	
				जहां से	जहां को
1.	मार्गरेट	सहायक	05-08-2022	भौ.सू.प. और सु.सं.नि.	दक्षिणी मुद्रण वर्ग,हैदराबाद
2.	एस.कृष्णैया	सर्वेक्षक	14-02-2023	भौ.सू.प. और सु.सं.नि.	महराष्ट्र एवं गोवा जीडीसी,पुणे
3.	पी.एम.पराते	अधीक्षण सर्वेक्षक (तदर्थ)	14-02-2023	भौ.सू.प. और सु.सं.नि.	मुद्रण क्षेत्र हैदरबाद
4.	अंबी टी.एस.	अधिकारी सर्वेक्षक	06-04-2023	भौ.सू.प. और सु.सं.नि.	केरल एवं लक्षद्वीप जीडीसी
5.	टी.कोटेश्वर राव	सर्वेक्षक	05-06-2023	भौ.सू.प. और सु.सं.नि.	आं.प्र. और ते.जीडीसी हैदराबाद
6.	मोव्वा वेंकट सुब्बाराव	मानचित्रकार (डिविजन-I)	16-06-2023	भौ.सू.प. और सु.सं.नि.	आं.प्र. और ते.जीडीसी हैदराबाद
7.	बी.वी.उमामहेश्वर राव	सर्वेक्षक	30-06-2023	भौ.सू.प. और सु.सं.नि.	आं.प्र. और ते.जीडीसी हैदराबाद
8.	बी.सी.परमार	सर्वेक्षक	08-05-2023	भौ.सू.प. और सु.सं.नि.	महराष्ट्र एवं गोवा जीडीसी,पुणे

सेवा निवृत्त अधिकारियों / कर्मचारियों की सूची

क्रम संख्या	नाम	पदनाम	सेवा निवृत्ति की तिथि
1.	श्रीमती वी. सरस्वती	एम.टी.एस.	31-10-2022
2.	श्री एम.शंकर	अधीक्षण सर्वेक्षक (तदर्थ)	31-12-2022
3.	श्री डी.शंकरय्या	एम.टी.एस.	30-06-2023
4.	श्री शेख मेहबूब	एम.टी.एस.	30-06-2023

वर्ष 2022-23 के लिए मानदेय से पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

क्रम संख्या	नाम सर्व श्री / श्रीमती	पदनाम
1	कौशिक डे	अधिकारी सर्वेक्षक
2	अरुण कुमार टी एस	अधिकारी सर्वेक्षक
3	स्वपन चौहान,	सर्वेक्षक
4	तन्नीरु देवेन्दर	सर्वेक्षक
5	चाकलि हरिनाथ	सर्वेक्षक
6	के.गंगाधर राव	सर्वेक्षण सहायक
7	एम.लक्ष्मण कुमार	सहायक
8	गारा प्रेमा कुमार	सहायक
9	डी.चिन्ना मौलाली	भंडार पाल ग्रेड-IV
10	शेख मेहबूब	एमटीएस
11	एस.वी.नायक	एमटीएस

मूल रूप से हिंदी में टिप्पण/ आलेखन कार्य करने के लिए प्रोत्साहन योजना वर्ष 2022-23

क्रम संख्या	नाम सर्व श्री / श्रीमती	पदनाम	पुरस्कार
1	अरुण कुमार टी एस	अधिकारी सर्वेक्षक	प्रथम पुरस्कार
2	गारा प्रेमा कुमार	सहायक	द्वितीय पुरस्कार
3	देवराजुगट्टु नागतेजा	प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय पुरस्कार

सेवा निवृत अधिकारी - वर्ष 2022-23

MOTIVATION HALL

MOTIVATION HALL

MOTIVATION HALL

स्थानांतरित अधिकारी - वर्ष 2022-23

MOTIVATION HALL

विभिन्न कार्यक्रम - वर्ष 2022-23

2022/10/13 11:34

NATIONAL HYDROLOGY PROJECT
PROCEDURE
OBJECTIVES
MAHARASHTRA
UTTAR PRADESH
CHHATTISGARH
MADHYA PRADESH
NATIONAL COMMISSION ON INTEGRATED WATER RESOURCES DEVELOPMENT (NCIWRD) REPORT

REMOTE SENSING DIRECTORATE
Application of Latest Technologies

बारहखड़ी

(बाल कविता)

कुमारी बी.आर.विस्मया
पुत्री
श्रीमती बी.आर.सुकन्या, एमटीएस

अ से अनार, आ से आम
बच्चों जग में करो नाम।

इ से इमली, ई से ईख
किताबों से मिलती है सीख ।

उ से उल्लू, ऊ से ऊन
निशा को चमकते मामा मून ।

ये ऋ से तो होता है ऋषि
भूमि-पुत्र करते हैं कृषि ।

ए से एड़ी, ऐ से ऐनक
दादाजी से घर में रौनक़ ।

ओ से ओखली, औ से औजार
छोटे-बड़ों में बाँटो प्यार ।

अं से अंगूर, अः से अतः
बाहरखड़ी सिखाना हो गया पूरा ।
समय से पहले सीख गए तो
बच्चों, बगीचे में खेलो पूरा ।

*****

हैदराबाद की चाय

श्री डी.नागतेजा, प्रवर श्रेणी लिपिक

सारी दुनिया को देखो तुम
बस चाय पे ही जीते हैं।
कश्मीर से कन्याकुमारी तक
हैदराबाद की चाय पर ही मरते हैं॥
सुस्त हो तब भी चाय।
चुस्त हो तब भी चाय॥

दिन शुरू करने से पहले एक कप चाय जरूरी है।
कोई दोस्त आ जाए तो 1/2 कर देते है॥
तीसरा कोई आ जाए तो 2/3 हो जाती है।
लॉजिक मत ढूंडो ये बस रिवाज है।
आधी-आधी चाय पीने का मक़सद सिर्फ मोहब्बत है॥

चाय तो जॉनी चाय है इसको कौन बदल पायेगा?
हैदराबाद की मशहूर चाय पीके आखिर कौन संभल पायेगा?
मौसम का इस पर रौब नहीं, बारिश में चाय ख़्वाइश है।
सर्दी में चाय जरूरत है, गर्मी में चाय गनीमत है॥

चाय बनाना भी मियां एक खुश नसीबी है।
तश्तरी में चाय पीना हैदराबाद की निशानी है॥
हैदराबाद की शान है चाय।
हैदराबाद का गुरूर है चाय॥

*****

व्यस्त रहने से आदमी के आधे दुःख कम हो जाते हैं।

*****

सबसे अच्छी साधना

--श्रीमती जे.भारती राज, डी/मैन डिविजन-I

भारतीयों के पवित्र ग्रंथ महाभारत के अनुसार सृष्टि के सभी जीवित प्राणियों के प्रति प्रेम, करुणा और दया ही सबसे अच्छी साधना है। महाभारत की कहानी एक कुत्ते के अपमान से प्रारंभ होती है और स्वर्गारोहण पर्व में कुत्ते के सम्मान के साथ समाप्त होती है। पांडवों के स्वर्गारोहण के समय में युधिष्टर के चार भाई और द्रौपदी रास्ते में ही मृत्यु प्राप्त करते हैं। सशरीर स्वर्ग जाने के लिए अर्हता प्राप्त धर्मराज का पीछा केवल एक कुत्ता ही करता है। स्वर्गद्वार पर इस कुत्ते को छोड़कर प्रवेश करने के लिए धर्मराज सहमत नहीं होते हैं। इस प्रकार धर्मराज ने अपनी अंतिम परीक्षा में, न्याय और मूक जीवों के प्रति प्रेम तथा दया दिखा कर विजय प्राप्त किया था।

प्रेम ढाई अक्षर का छोटा सा शब्द है, लेकिन इसमें एकता की बड़ी भावना और अनंत ऊर्जा छिपी हुई हैं। मनुष्य अधिक समय तक अकेला नहीं रह सकता है क्योंकि उसे प्रेम की आवश्यकता है और प्रेम उसे सामाजिक जीवन में ही प्राप्त होता है। समाज में भी कोई भी रिश्ता प्रेम पर ही टिका होता है। इंसान के रिश्ते-नाते भी प्रेम की नींव पर आधारित हैं। कहा जाता है कि प्रेम में महान जीवनदायी शक्ति है और यह शारीरिक, मानसिक और नैतिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। सभी प्राणियों से प्रेम करनेवालों का जीवनकाल (आयु) भी अधिक होता है।

अनेक ऋषियों ने कहा है कि मनुष्य मूलतः ईश्वर का रूप है और शरीर में रहने वाली आत्मा ही ईश्वर है। जैसे-जैसे ज्ञान का विस्तार होता जाता है, वैसे-वैसे आध्यात्मिक दृष्टिकोण में सुधार होता जाता है। इस तरह क्रमशः जकड़ी हुई सभी वासनओं का अंत हो जाता है और प्रेम आंखें खोल देता है।

दया, आशीर्वाद और सुरक्षा के लिए हमेशा हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, परंतु हम अन्य प्राणियों के प्रति निर्दयतापूर्ण व्यवहार करते हैं जो हमारे साथ ईश्वर की रचना का हिस्सा है। ईश्वर ने मनुष्य को मन, विचार और वाणी का वरदान दिया है। मनुष्य बलवान है, लेकिन दयाभाव का अभाव मनुष्य का सबसे छोटा गुण माना जाता है क्योंकि मूक प्राणियों के प्रति प्रेमपूर्वक व्यवहार करना मनुष्य धर्म है।

गौतम बुद्ध ने ईसा से पहले ही बौद्ध धर्म की स्थापना की थी और प्रेम के माध्यम से लाखों लोगों को प्रभावित किया था। उन्होंने प्रेम में निर्भयता और आनंद प्राप्त करने के तरीके सिखाए। "अहिंसा परमो धर्मः" मानकर जीने वाले संतों के सान्निध्य में तो जंगली जानवर भी अपने जन्मजात वैर भाव व हिंसात्मक गुण को त्याग देते हैं। ऋषियों

के आश्रमों में पालतु जानवर और जंगली जानवर आपस में घुल-मिल जाते थे और स्वेच्छा से घूमते थे। रमणाश्रम में बहुत से पशु-पक्षी निर्भयता से रहते थे। रमण ऋषि पशु-पक्षियों से बात करते थे, उन्होंने स्वयं के आचरण से दुनिया को दिखाया कि पशु-पक्षियों के साथ कैसे बर्ताव किया जाता है। उनके आश्रम में आज भी कुत्ता, कौआ और लक्ष्मी (पालतु गाय का नाम) की समाधियां देखी जा सकती हैं।

हमें कई ऐसे पशु प्रेमी देखने को मिलते हैं जो शेर और बाघ जैसे जंगली जानवरों के साथ भी बच्चों की तरह खेलते हैं, वृक्ष प्रेमी जो करोड़ों पौधे लगाकर पर्यावरण की रक्षा करते हैं। इस पृथ्वी पर आज भी ऐसे महान लोग हैं जो मानव सेवा को माधव (श्रीकृष्ण भगवान) की सेवा मानते हैं। ऐसे लोग चाहे वह कोढ़ हो या कोविड आपदा हो समर्पण के साथ मानवजाति की सेवा करते हैं तथा दया और प्रेम भावनाएं फैलाते हैं। प्रेम का कोई आयाम नहीं है, कोई पीढ़ीगत मतभेद नहीं है, प्रेम हमेशा परिपूर्ण होता है, यदि परिपूर्ण नहीं है तो वह प्रेम नहीं है। जिन्हें प्रेम का पूर्ण बोध है वे लोग इसका आनंद लेते हैं और दूसरों के साथ साझा करते हैं। प्रेम एक दिव्य भावना है, प्रेम दैवस्वरूप है, प्रेमतत्व ही ध्यानयोग है।

****

सादगी और सत्य में एक ही समानता है,
दोनों को सजाने की जरूरत नहीं होती ।

कुछ रोचक अभिव्यक्तियां

कुमारी जी. प्रणीती
पुत्री
श्री जी.प्रेम कुमार, कार्यालय अधीक्षक

Answer for	जिम्मेदार होना
Attend on	सेवा सत्कार करना
Believe in	विश्वास करना
Bring up	बच्चे का लालन-पालन करना
Count on	भरोसा रखना
Cover for	दूसरे के काम की जिम्मेदारी लेना
Do over	फिर से करना
Dawn on	समझ में आना
Eat into	जंग खाना
Explain away	बहाना बनाना,
Flare up	अचानक क्रोध करना
Follow suit	अनुकरण करना
Get along	घुल मिलकर रहना, दोस्ती रखना
Gloss over	दोष छिपाना
Hunt for	ढूंढना
Hang upon	ध्यान से सुनना
Inquire after	कुशल पूछना
Introduce into	नई चीज़ बीच में लाना
Jump at	उत्सुकता से स्वीकारना
Jump to	जल्दबाजी में निष्कर्ष निकालना
Knock off	काम बंद करना
Keep up	गति बनाये रखना
Let off	छोड़ देना
Look after	संभालना, ध्यान देना
Make room	जगह बनाना
Mix up	गडबड़ घोटाला करना
Occur to	विचार में आना
Pack off	जल्दी से चलता कर देना
Put right	मरम्मत करना
Spoilsport	कबाब में हड्डी
Apple polisher	मसका लगाने वाला

Eyewash	छलावा
I have two left feet	मैं बिलकुल नृत्य (Dance) नहीं कर सकता
Don't cook up stories	कहानियां मत बनाओ
He is a BRAIN BOX	वह बहुत चालाक है
Okay ! My bad	अच्छा, मेरी गलती
At the eleventh hour	बिलकुल अंतिम समय पर
She was mugged	उसके पैसे भी चोरी हो गए
She is a big mouth	उसके पेठ में कोई बात नहीं पचती
He is a loud mouth	वो बहुत जोर-जोर से (चीख-चीख के)बात करता है
I spoke my mind	मेरे मन में जो था मैं ने कह दिया
Why are you so mean ?	तुम इतनी मतलबी क्यों हो?
Enough is Enough !	अब बस ! बहुत हो गया !
She is headstrong	वो बहुत जिद्दी है। जो सोचती है वो कर लेती है
Stop being a cry baby	बच्चों की तरह रोना बंद करो
You are digging your own grave	तुम अपने पैर पर खुद कुल्हाड़ी मार रहे हो
I don't feel like doing anything	मेरा कुछ भी करने का मन नहीं कर रहा है
My hands are tied	मैं कुछ नहीं कर सकता, मेरे हाथ बन्धे है
He may come	वो आ भी सकता है और नहीं भी। 50-50 है
He might come	25% उम्मीद है उसके आने की
He must come	उसे जरूर आना चाहिए
He ought to come	यह उसकी जिम्मेदारी है कि वह आये
He should come	मेरी सलाह है कि उसे आना चाहिए
He could not come	वह आ नहीं पाया
But, He will come	परन्तु वह आयेगा
He does not come	वह नहीं आता है
He did not come.	वह नहीं आया
He is about to come	वह आने वाला है
He was about to come	वह आने वाला था
He used to come	वह आया करता था
Hr has come	वह आ गया है
Okay then, see you again !	ठीक है चलो, फिर मिलते हैं !

*****

पंच नरसिंहा क्षेत्रम यादाद्री

--- श्रीमती के.प्रसन्ना लक्ष्मी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

यादाद्री, यादगिरिगुट्टा मंदिर या श्रीलक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी मंदिर एक गुहालय के रूप में प्रसिद्ध है। तेलंगाणा राज्य सरकार के शासन काल में अब यह दिव्यक्षेत्र दर्शनार्थ आने वाले हजारों, लाखों भक्तजनों को आवास सुविधाएं देने वाले ब्रह्माण्ड आलय के रूप में विकसित हुआ है। हैदराबाद नगर से 60 कि. मी.दूरी पर स्थित इस गुहालय में भक्तजन का आना जाना सर्वसाधारण है। संकट काल में भक्तसुलभ लक्ष्मीनरसिम्हा स्वामी के शरण में जाना, मनौती चुकाना तेलंगाणा के ही नहीं बल्कि आसपास के राज्यों के लोगों की भी परंपरा है। पहले लोग हैदराबाद में ठहरते थे और बाद में दर्शन के लिए जाते थे। अब भक्तजनों को किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना करना नहीं पडेगा, क्योंकि आलय के समीप में ही ठहरने की सुविधा उपलब्ध है, साधारण नागरिक से लेकर देशाधिनेता तक, उनके हैसियत के अनुसार अनेक स्तर के होटल उपलब्ध है। दैवदर्शन के उपरांत पर्यटन स्थलों का संदर्शन भी सुलभसाध्य है।

तेलंगाणा के यादगिरी गुट्टा में स्थित "पंचनारसिम्ह क्षेत्र" के नाम से प्रख्यात यादाद्रि मंदिर से संबंधित स्थल पुराण में त्रेता युग के ऋषियों का उल्लेख मिलता है। रामायण के अनुसार महज्ञानी विभांडक का पुत्र ऋष्यश्रृंग, साक्षात् श्रीरामचंद्र भगवान की सहोदरी शांतादेवी का पति है। ऋष्यश्रृंग, शांतादेवी दंपत्तियों का पुत्र है यादऋषि, जो बचपन से ही विष्णुभक्त तथा दशावतारों में से चतुर्थ, "नरसिम्ह अवतार" के उपासक थे। नरसिम्हावतार में श्रीहरि का दर्शन प्राप्त करना ही यादऋषि की प्रगाढ इच्छा थी। स्वामी साक्षात्कार के लिए यादऋषि घने-जंगलों में घूमते-फिरते थे। एक बार यादऋषि को जंगल के वासी पकड़कर बलि चढ़ाने के लिए ले गए तो वानर समूह (लोगों के अनुसार साक्षात् भगवान हनुमान) ने उनका अपहरण किया तथा सिंहाकार पहाडों के बीच में छोड़ दिया। कहते हैं कि यादऋषि ने उन्हीं सिंहाकार पहाड़ियों के बीच दीर्घ तपस्या/साधना की। इस तपस्या के फलस्वरूप नरसिंहस्वामी का साक्षात्कार हुआ परंतु उस तेजोमय उग्रनरसिंह रूप से चकाचौंध यादऋषि की प्रार्थना मानकर स्वामी ने शांतस्वरूप धारण किया तथा श्रीलक्ष्मी समेत नरसिंह के रूप में प्रकट हुए। यादऋषि के अनुरोध पर अनेक, अर्थात् ज्वाला, गंडभेरुण्डा, योगानंदा, उग्रनरसिंहा, श्रीलक्ष्मीनरसिंहा स्वामि के रूपों का दर्शन प्रदान किया। स्वामी के इन दिव्य रूपों का दर्शन लोगों को भी प्राप्त कराने हेतु यादऋषि ने वरदान मांगा तो भक्तसुलभ स्वामी ने उसी गुहालय में उन्हीं रूपों का धारण किया। यह है यादाद्री का स्थलपुराण।

गुहालयों में स्थित दो शिलाओं पर योगानंद नरसिंहा स्वामी तथा श्रीलक्ष्मीनरसिंहा स्वामी मूर्तरूप में दर्शन देते हैं। सर्पाकृति की पतली रेखा में ज्वाला नरसिंहा स्वामी को दर्शाया गया है। पूर्व दिशा में क्षेत्रपालक आंजनेयस्वामी, पूर्व दिशा के पहाड़ी गड्ढों में गण्डभेरुण्डा नरसिंहास्वामी का निवास माना जाता है। यादगिरी पहाड़ के तेजोवलय को ही उग्रनरंसिंहास्वामी का अभौतिक रूप माना जाता है। इसी कारण से भक्तजन यादाद्री पहाड़ का प्रदक्षिणा भी करते हैं। अब यादाद्री में गिरि प्रदक्षिणा के लिए भी विनूतन प्रदक्षिणा पथ का निर्माण किया गया है। इस पथ पर आपको मनोरम दृश्य दिखाई देते हैं, जैसे यादमहर्षि का तपोवृक्षस्थली, महिमान्वित वृक्षों से भरपूर नक्षत्रवन, सीढ़ियों को चढ़कर देवालय जाने वाले भक्तों के लिए अलग रास्ता, लक्ष्मी पुष्करिणी, किसी भी दिशा से विभिन्न कोणों में दर्शन देने वाले देवालयों के शिखर समूह आदि। लक्ष्मी पुष्करिणी में उपलब्ध पवित्र गोदावरी नदी के जल से ही देवालय में मूर्तियों का अभिषेक किया जाता है।

यादाद्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामी आलय पुनर्निमाण में कृष्णशिला नामक पत्थर का उपयोग किया गया है। यादगिरी गुट्टा नाम से प्रचलित पहाडी गुहालय को सुदृढ शिल्पों से निर्मित देवालय के रूप में परिवर्तन करने वाले वास्तुशिल्पी, रूपशिल्पी का नाम है श्री आनंद साई। उन्होंने तमिल नाडु के श्रीरंगम आलय में भीषण गर्मी के मौसम में भी ठंडक का अनुभव किया था। इसका कारण वहां का गर्भालय, मुखमंडप तथा स्तंभों के निर्माण में कृष्णशिलाओं का उपयोग किया जाना है। ग्रीष्म ऋतु में शीतलता और शिशिर ऋतु में गर्मी प्रदान करना इस कृष्णशिला की विशिष्टता है। समय के साथ-साथ यह शिला और भी चिकनी व सुदृढ होती जाती है। कृष्णशिला का प्राशस्य जानने के बाद आनंद साई ने इन शिलाओं से ही आलय निर्माण करने का मन बनाया। इस संकल्प को तेलंगाणा के मुख्यमंत्री श्री के.चंद्रशेखर राव जी का अनुमोदन भी प्राप्त हुआ। देशव्यापी अन्वेषण के पश्चात् आंध्रप्रदेश राज्य के प्रकाशम जिले के गुरिजेपल्ली में तथा गुन्टूरू जिले के कम्मवारिपालेम में आलय निर्माण हेतु उपयुक्त कृष्णशिला पायी गयी। देवालय के पुनर्निमाण में 2.5 लाख टन कृष्णशिला का उपयोग किया गया है। कृष्णशिला बहुत ही कठिन पत्थर होता है, डिजाइन के सूक्ष्म बारिकियों को इन शिलाओं में उतारना शिल्पियों के लिए बहुत ही कष्टदायक कार्य होता है। फिर भी यह कठिन कार्य साकार किया गया। इस पुनर्निमाण प्रक्रिया में प्राचीन आलय निर्माण में पाये जाने वाले मिश्रण को ही तैयार कराकर उपयोग किया गया है। बडे जाइंट्स की जगह सीसा धातु (Lead) का भी प्रयोग किया गया है। इतनी सुदृढता से पुनर्निमाण किया गया है कि भूचाल का भी मंदिर पर असर नहीं होगा। आगम शास्त्र के अनुसार द्रविड वास्तुकला ही नहीं बल्कि देश के विभिन्न वास्तुकलाओं से मिश्रित निर्माण है यह मंदिर। पल्लव राजाओं की शैली में गोपुरम तथा ऊपर सुदर्शन चक्र स्थापित किया गया है। पहला प्राकार को पर्वदिनों में दर्शनार्थ आनेवाले भक्तों की भीड़ के लिए अष्टभुज मंडप के रूप में बनाया गया है जो पंक्तियों/क्यूबॉक्स में स्वामी के दर्शन की प्रतीक्षा करने

वाले भक्तों को छाया प्रदान करता है। मुखमंडप का निर्माण एक भव्य राजप्रासाद की तरह किया गया है जिसमें बारह वैष्णव आल्वारों (श्रीवैष्णववाद में दक्षिण भारतीय अल्वारों में से इन्हें श्री महाविष्णु के बारह सर्वोच्च भक्त माना जाता है) की सुंदर मूर्तियां विराजमान हैं। प्रकाश एवं वातानुकूलक की व्यवस्था इस प्रकार की गई है कि कहीं भी बिजिली के तार दिखाई नहीं देते और रात के समय में गर्भालय में प्रत्येक देवतामूर्ति के मुखमंडल की आभा भक्तों को दिव्यानुभूति प्रदान करती हैं। मंदिर के बाहर के क्यूलाइन को उत्तर भारत की शैली में सुंदर शिल्पों से सजाया गया है और पीतल व एल्यूमिनिय के मिश्रण से बनाया गया है ताकि पीतल लोह की गर्मी को कम किया जा सके। यादाद्री में हर दिन सूर्यास्त के समय सूर्यकिरण श्रीलक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी के चरण छूती है। इस अद्भुत क्रिया के बारे में आनंद साई कहते है कि हमने कुछ नहीं किया, आगम शास्त्र के अनुसार एक सरल रेखा में सबकुछ सजाते गए और देखा कि वेंचेपु मंडप से सूर्यकिरण आ रही है तथा ऐसी व्यवस्था किया कि सूर्यकिरण के रास्ते में किसी भी प्रकार अवरोध न हो। इस अद्भुत क्रिया के बारे में आलय पुनर्निर्माण की उच्चस्तर व शीघ्रता के बारे में बात करते हुए आनंद साई कहते है कि," डिजाइन मैंने किया, मुख्यमंत्री श्री के.चंद्रशेखर राव जी ने दीक्षा से अमल किया, परंतु मैं मानता हूँ कि यह सबकुछ श्रीलक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी ने ही करवा लिया है।"

उग्रम् वीरम् महाविष्णुम् ज्वलंतम् सर्वतोमुखम् ।।
नरसिम्हम् भीषणम् भद्रम् मृत्योरमृत्युम् नमाम्यहम् स्वाहा....।।

*****

अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस-30 सितंबर

जब लोग नदी, आकाश, पर्वत, बांध बन रहे थे
हमने पुल होना चुना।
पुल, जो सदियों से भाषाओं के दायरों को लाँघने में
तुम्हारी मदद करते आए हैं।
वे पुल जिनकी मदद से तुम बिना संस्कृत जाने रामायण
का ज्ञान पाए थे और बिना पुर्तगालह जाने
"दी अल्केमिस्ट" पढ़ पा रहे हो।

सभी अनुवादकों को अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत के बाहर हिंदी

--- विभिन्न स्रोतों से साभार

भारत की संस्कृति, इतिहास और वांग्मय अत्यंत प्राचीन है। आज से हजारों वर्ष पूर्व भारत में ज्योतिष, गणित, रसायन, नक्षत्र, आयुर्वेद, अर्थनीति, राजनीति, व्याकरण इत्यादि पर इतना कुछ लिखा जा चुका है कि आज भी पूरा विश्व उसका ऋणी है और उसी ज्ञान का उपयोग कर आज इतनी प्रगति कर पाया है। इसी प्रकार दुनिया के अन्य देशों से भारत का सांस्कृतिक एवं व्यापार-संबंध भी उतना ही प्राचीन है। अतएव, प्राचीनकाल में जब भारतीय सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक कारणों से विदेशों में गए और वहीं बस गए तो अपने साथ भारत की संस्कृति, अध्यात्म और भाषा को भी लेकर गए, जो विरासत के रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी होते हुए आज भी उनके बीच सुरक्षित है और वे भारतीय संस्कृति, अध्यात्म, वांग्मय एवं भाषा के प्रति अपनी श्रद्धा, प्रेम एवं आस्था को आज भी संजोये हुए हैं। यहां यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि प्राचीन काल में संपूर्ण भारतवर्ष में केवल संस्कृत बोली, लिखी और पढ़ी जाती थी, जिसकी उत्तराधिकारिणी होने के कारण हिंदी विदेशों में बसे इन भारतीयों के प्रेम एवं श्रद्धा को स्वाभाविक रूप से पाने में सफल हुई है। कालांतर में भारत को लम्बी दासता का सामना करना पड़ा और उस दौरान कई लोग अपना देश भले ही छोड़ गए, किन्तु अपनी संस्कृति, भाषा, धर्म और पहचान को नहीं भूल पाए और हिंदी को अपने बीच जीवित रखा। मारीशस, फीजी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिनाड, ग्वाटेमाला जैसे देशों में आज जो इतनी अधिक हिंदी बोली जा रही है, वह इसी का परिणाम है। बाद में जब भारत में स्वतंत्रता का आन्दोलन जोर पकड़ा, तो हमारे देश-भक्त स्वतंत्रता सेनानियों ने एकमत से हिंदी को स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा बनाने की घोषणा की।

हिंदी विश्व के लगभग 73 देशों में बोली, पढ़ी एवँ लिखी जाती है। विश्व के किसी भी कोने में जहाँ कहीं भी भारतीय हैं, वहाँ हिंदी भी है। इस प्रकार भारत के अलावा हिंदी मुख्य रूप से नेपाल, पाकिस्तान, मारीशस, फीजी, गुयाना, ग्वाटेमाला, सूरीनाम, त्रिनिनाड,संयुक्त अरब अमीरात, संयुक्त राज्य अमेरिका, बंग्लादेश, भूटान एवं इक्वेडर जैसे देशों में वहाँ की जनसंख्या के एक बड़े भाग द्वारा बोली जाती है। इसके अतिरिक्त थोड़ी-बहुत मात्रा में हिंदी ग्रेट ब्रिटेन, कनाडा, रूस, पेरू, थाईलैण्ड, सिंगापूर, म्यॉंमार, कुवैत, मलेशिया, मेक्सिको, दक्षिण-यमन, श्रीलंका, सउदी अरब, होंडुरास, अल साल्वडोर, अर्जेन्टाइना, बेनेजुएला, इंडोनेशिया, ब्राजील, मोजाम्बिक, पनामा पेरुग्वे, जाम्बिया, निकरागुआ, कोलम्बिया, ओमान, कतर, बहरीन तथा कोस्टारिका जैसे देशों में बोली जाती है। भारत के बाहर हिंदी को लोकप्रिय बनाने में भारत सरकार एवँ केंद्रीय हिंदी सचिवालय परिषद की भूमिका जितनी

महत्वपूर्ण रही है, उतना ही महत्वपूर्ण योगदान वहाँ रह रहे भारतीयों का भी रहा है।

हिंदी के पठन-पाठन के लिए सामग्री बनाने के क्षेत्र में प्रथम प्रयास गिक्राइस्ट ने किया और उन्होंने 1802 में "हिन्दी मैनुअल" तैयार किया। बाद में 1845 में डंकन फोब्स एवँ 1852 में पिन्कॉट ने भी "हिन्दी मैनुअल" की रचना की। इसी प्रकार सिविल सेवा परीक्षा में हिंदी को अनिवार्य बनाने का श्रेय फ्रेडरिक पिनकॉट को जाता है। इस प्रकार अमेरिका, चेकोस्लाविया एवं जर्मनी में हिंदी के अध्ययन को प्रारंभ करने का श्रेय क्रमशः गुम्फर्ज व हैरिस, पोर्जीजूका तथा लोठार लुत्से को जाता है। विदेशों में हिंदी को लोकप्रिय बनाने एवं अध्ययन की सुविधा के दृष्टिकोण से कई भाषाओं में हिंदी के शब्दकोष भी तैयार किये गए।

कई निजी संस्थानों के कारण हिंदी को भारत के बाहर फलने-फूलने का अवसर मिला। इन निजी संस्थाओं द्वारा भारत के बाहर अर्थात् विदेशों में हिंदी को विश्वजनीन बनाने हेतु सराहनीय प्रयास किया जा रहा है। उदाहरण के लिए मारीशस में तिलक विद्यालय, हिन्दी प्रचारिणी सभा और परोपकारिणी सभा, संयुक्त राज्य अमेरिका में अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति, कनाडा में हिन्दी परिषद और सूरीनाम में सूरीनाम हिन्दी परिषद, हिंदी के प्रचार-प्रसार में अहम् भूमिका निभा रहे हैं। इधर दो दशक में भारत में खूब प्रतिभा पलायन हुआ है। हमारे कई भारतीय संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेड ब्रिटेन, संयुक्त अरब अमीरात, संयुक्त अरब गणराज्य, कुवैत, कनाडा, जर्मनी जापान, लीबिया, सिंगपुर एवँ मलेशिया जैसे देशों में अपनी सेवा प्रदान करने गए और उनमें से अधिकांश वहाँ स्थाई रूप से बस गए हैं और वहाँ की नागरिकता प्राप्त कर ली है, जबकि कुछ बिना नागरिकता प्राप्त किए अस्थायी रूप से एक लंबी अवधि से वहाँ रह रहे हैं, किन्तु भारत से अलग होकर भी वे भारत की मिट्टी से अपना मोह नहीं छोड़ पाए हैं। सच तो यह है कि विदेश जाने के बाद ही हिन्दी के प्रति उनमें प्रेम, श्रद्धा और मोह जगी है। शायद आपको यह जानकर अश्चर्य होगा कि जब ये भारतीय आपस में मिलते हैं अथवा जब कभी मिलन समारोह (गेट टुगेदर), सांस्कृतिक या सामाजिक समारोह के अवसर पर एकत्रित होते हैं, तो वे हिन्दी में ही बातचीत करते हैं। चूँकि, विदेशों में अपनी सेवा एवँ प्रतिभा के योगदान देने वाले इन भारतीयों में से अधिकांश दक्षिण-भारत के होते हैं, अवएत हिंदी के लिए उनकी यह आस्था एवँ प्रेम निःसंदेह हमारे लिये हर्ष एवँ आश्चर्य की बात हो सकती है। हिंदी टेलीविजन चैनलों के कार्यक्रम वहाँ काफी लोकप्रिय हैं। रामायण और महाभारत जैसे धारावाहिक न केवल भारत में धूम मचाई थी, अपितु दुनियाभर में बसे सभी भारतीयों एवँ हिंदी प्रेमीयों के बीच भी खूब लोकप्रिय हुई थी। हिंदी सिनेमा एवँ छोटे पर्दे के हिंदी कार्यक्रम वहाँ खूब लोकप्रिय हैं। हिंदी संगीत, कला एवं साहित्य के प्रति भी लोगों में बहुत रुझान है। विदेशों में भारतीय गीतकारों, गायकों, कलाकारों एवं साहित्यकारों के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इतना ही नहीं, भारत के बाहर रह रहे भारतीयों में अपने राष्ट्र एवं संस्कृति से इतना अधिक प्रेम है कि आए दिन वे भारतीय संगीत विशेषतः शास्त्रीय

संगीत, नृत्य विशेषतः कत्थक, कूचीपुडी, भरतनाट्यम एवं गरबा नृत्य, हरि कीर्तन, भजन संध्या और धार्मिक उत्सव यथा-श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, गणपतिपूजा, महाशिवरात्रि इत्यादि का आयोजन करते रहते हैं और यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि ऐसे अवसर पर वे आपस में हिंदी में ही बात करते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिंदी केवल भारत में सीमित नहीं है, अपितु भारत के बाहर भी कई देशों में यह अत्यंत लोकप्रिय है और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इसका खूब प्रयोग किया जा रहा है। सच तो यह है कि दुनियाभर के विभिन्न देशों में बसे भारतीयों एवं हिंदू के संपर्क में जब कभी आते हैं, तो वे आपस में हिंदी का ही प्रयोग करते हैं। इस प्रकार एक ओर हिंदी का स्वरूप निर्विवाद रूप से अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित हो चुका है, तो दूसरी ओर हिंदी का भविष्य अत्यंत उज्जवल है और इसके विकास की अपरिमित संभावनाएं विद्यमान हैं।

*****

भाषा अपने दिमाग में संस्कृति भी लाएगी।
अंग्रेजी में कहते है," EVERYTHING IS FAIR IN LOVE AND WAR"
इसका मतलब होता है, " इश्क और जंग में सब जायज़ है "
"इश्क", "जंग", "जायज़", ये सब फारसी शब्द हैं ।
हमारे भारतीय भाषाओं में ऐसी कुछ कहावत ही नहीं है।
हिंदी या संस्कृत भाषा में कभी नहीं सुना है कि युद्ध और प्रेम में सर्व सब कुछ उचित या अनुचित है ।
क्योंकि युद्ध का भी अपना धर्म होता है और प्रेम में त्याग होती है। यही हमें सिखाया गया है।
जिनके लिए जंग में सब जायज़ है, उनके लिए आतंकवाद भी जायज़ है।

भूगणित (GEODESY) से संबंधित कुछ हिंदी पारिभाषिक शब्द

---श्री बी.सी.परमार, अधिकारी सर्वेक्षक

1.	Linear measurement	-	रैखिक मापन
2.	Angular measurement	-	कोणीय मापन
3.	Coordinate system	-	संयोजन पद्धति
4.	Geodetic latitude	-	ज्योडीय अक्षांश
5.	Vertical datum	-	लंबरप आंकडा
6.	Mean sea level	-	माध्य समुद्र तल
7.	Geoid	-	भू-आभ
8.	Level surface	-	तलपृष्ठ
9.	Plumb line	-	प्लंब लाइन
10.	Orthometric height	-	लंबिक उच्चता
11.	Ellipsoidal height	-	दीर्घ वृत्तज ऊंचाई
12.	Astronomy	-	खगोल विद्या
13.	Celestial equator	-	खगोलीय मध्य रेखा
14.	Zenith point	-	शिरोबिंदु, शीर्ष बिंदु
15.	Celestial horizon	-	खगोलीय क्षितिज, आकाशीय क्षितिज
16.	Observers meridian	-	प्रेक्षक का ध्रुववृत्त
17.	North point of horizon	-	उत्तर बिंदु का क्षितिज
18.	South point of horizon	-	दक्षिण बिंदु का क्षितिज
19.	Vertical circle	-	लंबवत वृत्त
20.	Prime vertical	-	आधारभूत/ मुख्य लम्ब
21.	Meridian	-	ध्रुव वृत्त

22. East point of horizon - पूर्व बिंदु का क्षितिज
23. West point of horizon - पश्चिम बिंदु का क्षितिज
24. Co-latitude - पूरक अक्षांश
25. Longitude - देशान्तर
26. Altitude - शिरोबिंदु
27. Zenith distance - शिरोबिंदु दूरी
28. Azimuth - दिगंश
29. Declination - अवनति (नीचे को झुकाव)
30. Co-declination or Polar Distance- ध्रुवीय दूरी (ध्रुव के समीप का दूर)
31. Hour Circle - आवर सर्किल
32. Ecliptic - क्रांतिवलय
33. Obliquity of Ecliptic - क्रांतिवलय का तिरछापन
34. Libra - लीब्रा
35. Solstices - उच्चतम शिखर
36. Right Ascension - सही अधिरोहण
37. Celestial Longitude - क्षैतिज अक्षांश
38. Celestial Latitude - क्षैतिज रेखांश
39. Upper Transit - ऊर्ध्व गति
40. Lower Transit - अवनति
41. Astronomical Triangle - खगोलीय त्रिकोण
42. Local Mean time - स्थानीय औसत समय
43. Greenwich mean time - ग्रीनविच औसत समय
44. Field astronomy - क्षेत्रीय खगोल विज्ञान
45. Astronomical co-ordinates - खगोलीय निर्देशांक
46. Pole star - ध्रुव तारा
47. North pole - उत्तर ध्रुव

48. South pole	-	दक्षिण ध्रुव
49. Aerial Survey	-	हवाई सर्वेक्षण
50. Aerial Reconnaissance	-	विमान वीक्षण
51. Web application	-	वेब अनुप्रयोग
52. Web Publication	-	वेब प्रकाशन
53. Web Address	-	वेब पता
54. Portal	-	पोर्टल/संवहन
55. Leveling of Land	-	समतलीकरण
56. High precision leveling	-	उच्च परिशुद्ध समतलीकरण
57. High precision instrument	-	उच्च परिशुद्ध तामापी यंत्र
58. On screen correction	-	स्क्रीन पर संशोधन
59. Photogrammetric	-	फोटोग्रामितीय
60. Drone	-	दूर नियंत्रित यान (ड्रोन)
61. Work by Remote Sensing	-	दूर संवेदन द्वारा काम
62. Datum	-	आधार
63. Gravitation	-	गुरुत्वाकर्षण
64. Eliptical	-	दीर्घ वृत्ताकार
65. Orbit	-	कक्ष
66. Orbital Speed	-	परिक्रमण चाल
67. Satellite	-	उपग्रह
68. Geo-Stationary Satellite	-	भू-स्थायी उपग्रह
69. GeoSychronous	-	भू-तुल्यकालिक

*****

वक्त और हालात सदा बदलते रहते है लेकिन अच्छे रिश्ते और सच्चे दोस्त कभी नहीं बदलते ...

पुष्पांजलि विमोचन समारोह-2022

गंगा नदी
637350136

राष्ट्रीय जल परियोजना

स्वामित्व योजना